मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

मुंबई
वर्षः 8 अंक 178
शनिवार, 10 जनवरी 2026
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

आतंकवाद पर अब होगा डिजिटल स्ट्राईकः अमित शाह

नई दिल्ली, 09 जनवरी। भारत की पहली राष्ट्रीय आईईडी डेटा प्रबंधन प्रणाली (एनआईडीएमएस) का शुभारंभ करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि यह आतंकवाद के खिलाफ अगली पीढ़ी का सुरक्षा कवच बनेगी और देश में होने वाली सभी प्रकार की आतंकवादी घटनाओं की जांच और उनके विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण में आने वाले दिनों में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगी, जिससे देश की आंतरिक सुरक्षा प्रणाली तीन प्रमुख तरीकों से मजबूत होगी।

शाह ने गुरुग्राम के मानेसर स्थित राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) छावनी में एनआईडीएमएस का वर्चुअल उद्घाटन करते हुए यह बयान दिया। यह भारत की आईईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) विरोधी और आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम में केंद्रीय गृह सचिव, खुफिया ब्यूरो (आईबी) के निदेशक, एनएसजी के महानिदेशक, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के महानिदेशक और विभिन्न राज्यों के पुलिस महानिदेशक उपस्थित थे।

एनएसजी द्वारा विकसित एनआईडीएमएस एक सुरक्षित, राष्ट्रीय स्तर का डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य तात्कालिक विस्फोटक उपकरणों (आईईडी) से संबंधित डेटा का व्यवस्थित संग्रह, संकलन और प्रसार करना है। शाह ने अपने संबोधन में कहा, देश में होने वाली सभी प्रकार की आतंकवादी घटनाओं की जांच और उनके विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण के लिए एनआईडीएमएस आने वाले दिनों में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा। इसके अलावा, एनआईडीएमएस आतंकवाद के खिलाफ अगली पीढ़ी का सुरक्षा कवच बनेगा।

मंत्री ने बताया कि गृह मंत्रालय ने पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न प्रकार के डेटा एकत्र किए हैं, लेकिन अब तक वे अलग-अलग थे। भाजपा नेता ने कहा, अब हम इन सभी डेटा स्रोतों को आपस में जोड़ने और उनके विश्लेषण के लिए उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सॉफ्टवेयर विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। आज एनआईडीएमएस का शुभारंभ इस प्रक्रिया को गति देगा और देश को आतंकवाद से सुरक्षित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

सिरमौर में पहाड़ी से नीचे गिरी बस, आठ लोगों की मौत और पांच अन्य घायल

सिरमौर, 09 जनवरी। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में शुक्रवार को एक निजी बस के खाई में गिरने से आठ लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य यात्री घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।

सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में बड़ी संख्या में लोगों को बचाव कार्य में मदद करते और बस के मलबे से घायलों को निकालने की कोशिश करते देखा जा सकता है। पुलिस ने बताया कि यह दुर्घटना हरिपुरधार इलाके में उस समय हुई जब बस सोलन से आ रही थी और बस सड़क से 100 से 200 फुट नीचे जा गिरी। पुलिस के मुताबिक, बस गिरने के बाद पलट गयी और दुर्घटना के बाद स्थानीय लोग बचाव कार्य के लिए दौड़े व पुलिस को इसकी सूचना दी। उद्योग मंत्री व शलाई विधानसभा क्षेत्र से विधायक हर्षवर्धन चौहान ने बताया कि जिला प्रशासन को अलर्ट कर दिया गया है और ददाहू, संगड़ाह और नाहन के अस्पतालों में चिकित्सा दल तैयार हैं। विधायक ने कहा कि दुर्घटना का कारण अब तक पता नहीं चल पाया है। उन्होंने दुर्घटना पर शोक व्यक्त किया।

जेपी नड्डा ने ममता सरकार पर निशाना साधा

कोलकता, 09 जनवरी। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार पर लोगों को स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करने में विफलताओं का आरोप लगाते हुए कहा कि आयुष्मान भारत योजना से वंचित रहने और कल्याणकारी कार्यक्रमों के अप्रभावी कार्यान्वयनद्द के कारण गरीब और कमजोर वर्ग के लोग जीवन रक्षक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हो गए हैं। पश्चिम बंगाल के तंगरा में आयोजित एक डॉक्टर्स सम्मेलन को संबोधित करते हुए नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित क्रांतिकारी पहलों की सराहना भी की।

गुरुवार को जारी एक आधिकारिक बयान के अनुसार, उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य संकेतकों में ऐतिहासिक राष्ट्रीय प्रगति के बावजूद, आयुष्मान भारत योजना से वंचित रहने और कल्याणकारी कार्यक्रमों के अप्रभावी कार्यान्वयन के कारण पश्चिम बंगाल अभी भी पिछड़ा हुआ है। नड्डा ने जोर देकर कहा कि राज्य सरकार की राजनीतिक बाधाओं के कारण गरीब और कमजोर वर्ग के लोग जीवन रक्षक स्वास्थ्य सेवाओं के लाभों से वंचित हो गए हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बंगाल की जनता इस कुशासन को नकार देगी और विकासोन्मुखी शासन का मार्ग प्रशस्त करेगी। कार्यक्रम के दौरान पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी, डॉ. शारदा मुखोपाध्याय, अन्य डॉक्टरों और पार्टी कार्यकताओं सहित कई लोग मंच पर उपस्थित थे। बिधाननगर स्थित अल्टेयर बुटीक होटल में, नड्डा ने जिला अध्यक्षों, विभागीय संयोजकों और प्रवासी कार्यकताओं के साथ बैठक की। बैठक को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि टीएमसी के शासन में बंगाल घुसपैठियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बन गया है। बयान में आगे कहा कि हालांकि, बंगाल अब गुमराह नहीं होगा और आगामी विधानसभा चुनावों में जनता ममता बनर्जी और टीएमसी को सबक सिखाएगी और पश्चिम बंगाल में राष्ट्रवादी, विकासोन्मुखी भाजपा सरकार का गठन करेगी।

नालासोपारा में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की विशाल चुनावी सभा, महायुति की जीत का दावा

नालासोपारा। नालासोपारा ईस्ट स्थित सेंट्रल पार्क मैदान में वसई-विरार शहर महानगरपालिका आम चुनाव 2025-2026 के मद्देनजर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने एक भव्य चुनावी सभा को संबोधित किया। इस सार्वजनिक बैठक का आयोजन वार्ड क्रमांक 01 से 29 तक महायुति (भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना, श्रमजीवी संगठन एवं अग्री सेना) के सभी उम्मीदवारों के प्रचार के लिए किया गया था।

इस ऐतिहासिक सभा में हजारों की संख्या में नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अपने संबोधन में महायुति सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए वसई-विरार क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए महायुति को समर्थन देने की अपील की। उन्होंने कहा, ह्लविकास, विश्वास और सुरक्षा के लिए महायुति ही एकमात्र विकल्प है।ह्व

सभा में वसई की विधायक स्नेहा दुबे पंडित, भाजपा महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष एवं वरिष्ठ नेता रवींद्र दादा चव्हाण, महाराष्ट्र राज्य परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक, श्रमजीवी संगठन के संस्थापक एवं आदिवासी विकास समीक्षा समिति (मंत्री स्तर) के अध्यक्ष विवेक भाऊ पंडित, पालघर लोकसभा सांसद हेमंत सावरा तथा वसई-विरार शहर महानगरपालिका के मुख्य चुनाव अधिकारी एवं पूर्व सांसद श्रीमती पूनम ताई महाजन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

इसके अलावा शिवसेना संपर्क प्रमुख रवींद्र फाटक, नालासोपारा विधायक राजन नाईक, पालघर विधायक राजेंद्र गावित, बोईसर विधायक विलास तारे, विक्रमगढ़ विधायक हरिश्चंद्र भोये, भाजपा ठाणे संभागीय संगठन मंत्री हेमंत म्हात्रे, भाजपा वसई-विरार शहर जिला अध्यक्ष प्रज्ञा पाटिल, शिवसेना जिला प्रमुख नीलेश तेंदुलकर, श्रमजीवी संगठन जिला अध्यक्ष सुरेश रांगेड़, अग्री सेना अध्यक्ष कैलास पाटिल, भाजपा पालघर जिला अध्यक्ष भरत राजपूत, शिवसेना तालुका प्रमुख सुदेश चौधरी सहित महायुति के सभी पार्षद उम्मीदवार, पदाधिकारी और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद थे।

इस जनसभा ने वसई-विरार क्षेत्र में महायुति की राजनीतिक स्थिति को और मजबूत किया है। कार्यकताओं और समर्थकों में यह विश्वास स्पष्ट रूप से देखने को मिला कि आगामी नगर निगम चुनावों में महायुति भारी बहुमत से जीत दर्ज करेगी।

ममता बनर्जी के समर्थन में महबूबा मुफ्ती, बोलीं- वो शेरनी हैं, झुकेंगी नहीं

कश्मीर, 09 जनवरी। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को शेरनी बताते हुए कहा कि टीएमसी प्रमुख बहुत बहादुर हैं और आत्मसमर्पण नहीं करेंगी। पश्चिम बंगाल के कोलकाता स्थित आईपीएसी कार्यालय पर ईडी की छापेमारी और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विरोध पर पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने कहा कि मैंने पहले भी कहा है कि जम्मू-कश्मीर एक परीक्षण प्रयोगशाला बन गया है और यही बात अन्य राज्यों पर भी लागू होती है। चाहे एनआईए हो, ईडी हो या अन्य, केंद्रीय एजेंसियों द्वारा यहां छापेमारी आम बात है, लेकिन अब यह अन्य राज्यों में भी फैल रही है।

महबूबा मुफ्ती ने साफ तौर पर कहा कि मुझे उम्मीद है कि ममता बनर्जी साहसी होंगी। वह शेरनी हैं; वह इनसे सख्ती से निपटेंगी। उन्होंने अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद खुद, फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा कि जब अनुच्छेद 370 निरस्त किया गया, जब छापे मारे गए और जब तीन मुख्यमंत्रियों को जेल में डाला गया, तब अधिकांश राजनीतिक दलों ने चुप्पी साधे रखी। अब यही स्थिति पूरे देश में देखने को मिल रही है।

जम्मू क्षेत्र के लिए अलग राज्य की मांग के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसा कदम सही नहीं होगा। उन्होंने कहा कि जम्मू में जो माहौल बनाया जा रहा है, उसका मतलब यह होगा कि वे जिन्ना के दो-राष्ट्र सिद्धांत को नकार कर भारत के साथ जम्मू-कश्मीर के गठबंधन के फैसले को नकार देंगे। अगर वे धर्म के आधार पर जम्मू-कश्मीर का विभाजन करते हैं, तो इसका मतलब होगा कि जिन्ना सही थे। अगर ऐसा होता है, तो यह बहुत गलत फैसला होगा।

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित श्री माता वैष्णो देवी चिकित्सा उत्कृष्टता संस्थान को बंद किए जाने का जिक्र करते हुए पीडीपी अध्यक्ष ने कहा कि यह गलत था और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को हस्तक्षेप करना चाहिए था। उन्होंने कहा कि अब सवाल कॉलेज में पढ़ रहे छात्रों के स्थानांतरण का नहीं है, क्योंकि यह सरकार की जिम्मेदारी है, बल्कि इसके प्रभाव का है।

सीएम सुक्खू ने पंचायत चुनाव 30 अप्रैल से पहले कराने के अदालत के आदेश पर सवाल उठाये

हिमाचल प्रदेश। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने आपदा अधिनियम लागू होने के बावजूद राज्य में पंचायत चुनाव कराने के उच्च न्यायालय के आदेश पर शुक्रवार को सवाल उठाये। सुक्खू ने कहा, यह सवाल हम अदालत से पूछेंगे कि क्या आपदा अधिनियम निष्प्रभावी हो गया है और उसका कोई अर्थ नहीं रह गया है।

यह प्रतिक्रिया उच्च न्यायालय द्वारा सरकार को पंचायती राज संस्थानों (पीआरआई) और नगर निकायों के चुनाव 30 अप्रैल 2026 से पहले कराने के निर्देश के तुरंत बाद आई। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि उच्च न्यायालय के कई फैसले मनमाने हैं और उनकी कोई स्पष्ट कानूनी व्याख्या नहीं है।

उन्होंने कहा कि मुद्दा पंचायत चुनावों का नहीं, बल्कि केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए आपदा अधिनियम की कानूनी व्याख्या और उसकी प्रासंगिकता का है। मुख्यमंत्री ने कहा, हम अदालत से स्पष्टीकरण मांगेंगे कि क्या आपदा अधिनियम की कोई प्रासंगिकता है भी?

विश्व हिंदी दिवस- 10 जनवरी 2026

विश्व में हिन्दी की बढ़ती साख: भारत में उपेक्षा क्यों?

-ललित गर्ग

हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाला विश्व हिंदी दिवस केवल एक औपचारिक या प्रतीकात्मक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा की वैश्विक यात्रा, उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा, उसके सामने उपस्थित चुनौतियों और हमारे अपने राष्ट्रीय आचरण की विडंबनाओं पर गहन चिंतन का अवसर है। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति कराता है जब पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी बोली गई थी और भारत की सांस्कृतिक आत्मा ने विश्व मंच पर अपनी मौलिक पहचान दर्ज कराई थी। आज स्थिति यह है कि हिंदी विश्व में सम्मान, स्वीकार्यता और लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों को छू रही है, लेकिन अपने ही देश में यह अपेक्षा, उपेक्षा और संकोच के बीच झूलती दिखाई देती है। यही विरोधाभास विश्व हिंदी दिवस को और अधिक प्रासंगिक बना देता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर में फैले हिंदी जानकारों, हिंदीभाषियों को एकजुट करना, हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित एवं प्रोत्साहित करना और हिंदी की आवश्यकता से अवगत कराना है। अंग्रेजी भाषा भले ही दुनियाभर के कई देशों में बोली है और लिखी जाती

है लेकिन हिंदी हृदय की भाषा है। विश्व हिन्दी दिवस विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करने तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का प्रभावी उपक्रम है।

हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है, यह भारतीय सभ्यता, संस्कृति, संवेदना और सामूहिक चेतना की वाहक है। यह लोक से उपजी, लोक में पली और लोक के लिए ही जीने वाली भाषा है। हिंदी का सबसे बड़ा गुण उसकी सहजता, सरलता और वैज्ञानिक संरचना है। यह ध्वन्यात्मक भाषा है, जिसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है, जिससे इसे सीखना और अपनाना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। यही कारण है कि जिन देशों में भारतीय प्रवासी बसे हैं, वहां हिंदी ने सहज ही अपनी जड़ें जमा ली हैं। एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका तक हिंदी आज केवल भारतीयों की भाषा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद की भाषा बनती जा रही है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, बॉलीवुड, भक्ति साहित्य और डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह दुनिया की तीसरी या चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, अंग्रेजी और मंदारिन चीनी के बाद, और भारत के साथ-साथ नेपाल, मॉरीशस, फिजी जैसे देशों में भी इसका व्यापक उपयोग है और यह विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रही है।

विश्व में लगभग साठ-सत्तर करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते, समझते या किसी न किसी रूप में उससे जुड़े हैं। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। विश्व हिंदी सम्मेलन, जिसकी शुरूआत 1975 में नागपुर में हुई थी, आज एक वैश्विक वैचारिक आंदोलन का रूप ले चुका है। इन सम्मेलनों ने यह सिद्ध किया है कि हिंदी केवल भावनाओं या साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि विचार, विज्ञान, कूटनीति और वैश्विक संवाद की भी सक्षम भाषा है। हिंदी को वैश्विक मंच पर आत्मसम्मान और स्वाभिमान के साथ प्रस्तुत करने का श्रेय यदि किसी भारतीय नेता को जाता है, तो वे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी हैं। 1977 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिया गया उनका भाषण केवल भाषण नहीं था, बल्कि वह एक सांस्कृतिक उद्घोषणा थी। अटल बिहारी वाजपेयी ने यह सिद्ध कर दिया कि हिंदी में भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शांति, निरस्त्रीकरण और मानवता जैसे गहन विषयों पर प्रभावी संवाद संभव है। उनके लिए हिंदी भावुक आग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्रबोध की सशक्त अभिव्यक्ति थी। उन्होंने हिंदी को सत्ता की भाषा बनाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उसे संवाद और आत्मगौरव की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में हिंदी की यात्रा कुछ हद तक धीमी अवश्य हुई, विशेष रूप से शासन और उच्च प्रशासनिक स्तर पर। अंग्रेजी को आधुनिकता, सफलता और वैश्विकता का प्रतीक मान लिया गया, जबकि हिंदी को प्रायः भावनात्मक या घरेलू दायरे में सीमित कर दिया गया। शिक्षा, न्यायपालिका, कॉर्पोरेट जगत और उच्च प्रशासन में हिंदी अपेक्षित स्थान नहीं बना सकी। हालांकि हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और सिनेमा ने इस दौर में भी अपनी सृजनात्मक ऊर्जा बनाए रखी, लेकिन नीतिगत स्तर पर हिंदी को वह प्राथमिकता नहीं मिल पाई जिसकी वह हकदार थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में हिंदी ने एक बार फिर वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ उपस्थिति दर्ज कराई है। वे विश्व के किसी भी मंच पर हिंदी में बोलने से संकोच नहीं करते। संयुक्त राष्ट्र महासभा, जी-20 सम्मेलन, शंघाई सहयोग संगठन या प्रवासी भारतीयों के कार्यक्रम, हर जगह उनकी हिंदी यह संदेश देती है कि अपनी भाषा में बोलना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल का परिचायक है। नरेंद्र मोदी ने हिंदी को अनुवाद की बैसाखी के सहारे नहीं, बल्कि उसकी मौलिक शक्ति के साथ प्रस्तुत किया। डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया जैसे अभियानों में हिंदी को केंद्र में रखा गया, जिससे आम नागरिक का शासन से संवाद अधिक सुलभ और प्रभावी हुआ। सरकारी योजनाओं, मोबाइल ऐप्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की बढ़ती उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि तकनीक और हिंदी एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं।

इसके बावजूद यह एक कटु सत्य है कि हिंदी आज विश्व में जितनी प्रतिष्ठित हो रही है, उतनी ही अपने ही देश में उपेक्षित होती जा रही है। अंग्रेजी को सामाजिक प्रतिष्ठा और बौद्धिक श्रेष्ठता का पैमाना बना दिया गया है। माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाकर गर्व महसूस करते हैं, जबकि हिंदी माध्यम को हीन दृष्टि से देखा जाता है। यह समस्या भाषा की नहीं, मानसिकता की है। यह मानसिक गुलामी है, जो हमें अपनी ही भाषा से दूर करती जा रही है। राजनीतिक दल हिंदी की बात तो करते हैं, लेकिन उसे शिक्षा, न्याय और प्रशासन की मुख्यधारा में स्थापित करने के लिए ठोस इच्छाशक्ति का अभाव दिखाई देता है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, यह तथ्य अक्सर उपेक्षित रह जाता है। इसकी वर्णमाला उच्चारण विज्ञान पर आधारित है। इसमें नए शब्द गढ़ने और विदेशी शब्दों को आत्मसात करने की अद्भुत क्षमता है। संस्कृत से जुड़ी होने के कारण यह तकनीकी, दार्शनिक और वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण में पूरी तरह सक्षम है। हिंदी में भावनाओं की अभिव्यक्ति जितनी सहज है, उतनी ही तार्किक और बौद्धिक विमर्श की भी क्षमता है। यही कारण है कि हिंदी जनभाषा होते हुए भी वैश्विक संवाद की भाषा बनने की पूरी क्षमता रखती है।

सच्चाई तो यह है कि देश में हिंदी अपने उचित सम्मान को लेकर जूझ रही है। राजनीति की दूषित एवं संकीर्ण सोच का परिणाम है कि हिन्दी को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान आजादी के अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र में अंग्रेजी को मिल रहा है। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की सहायता जरूर ली जाए लेकिन तकनीकी एवं कानून की पढ़ाई एवं राजकाज की भाषा के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी को प्रतिबंधित या नियंत्रित किया जाना चाहिए। आज भी भारतीय न्यायालयों में अंग्रेजी में ही कामकाज होना राष्ट्रीयता को कमजोर कर रहा है। हिन्दी के बहुआयामी एवं बहुतायत उपयोग में ही राष्ट्रीयता की मजबूती है, जीवन है, प्रगति है और शक्ति है किन्तु इसकी उपेक्षा से विनाश है, अगति है और स्खलन है। एथनोलॉग के वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण में बताया गया है कि दुनियाभर की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में 6 भारतीय भाषाएं हैं, इनमें हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गयी है। हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन यह भविष्य तभी साकार होगा जब हम स्वयं अपनी भाषा पर विश्वास करेंगे। विश्व हिंदी दिवस इसी संकल्प का दिन है कि हिंदी को विश्व में प्रतिष्ठित करने के साथ-साथ अपने ही घर में उसका सम्मान और अधिकार लौटाया जाए, क्योंकि जब भाषा सशक्त होती है, तब राष्ट्र की आत्मा भी सशक्त होती है।

वेनेजुएला पर हमला अमेरिका की दादागिरी कंही तीसरा विश्व युद्ध न करा दे

- सुरेश सिंह बैस शाश्वत

अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर सारे अंतरराष्ट्रीय नियमों को धता बताते हुए जो अलोकतांत्रिक कार्यवाही की गई है वह निश्चय है तृतीय विश्व युद्ध को आमंत्रित करता नजर आ रहा है। यह घटना ऐसी विलक्षण घटना है जो दुनिया के देशों को दो खेमों में बांटता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। एक तरफ अमेरिका और उसके हित चिंतक देश है तो दूसरी ओर पूरा यूरोप और नाटो के देश, ट्रंप की कार्रवाई से भृकुटी तान चुके हैं, डेनमार्क ने तो यहां तक कह दिया है कि अगर ऐसे ही ग्रीनलैंड को अमेरिका द्वारा हथियाने की हिमाकत की गई तो यह बहुत बुरा परिणाम देने वाला साबित होगा। दूसरी और रूस और चीन भी अमेरिका के इस कार्रवाई की तीखी निंदा कर चुके हैं। केवल भारत ही एक ऐसा शक्तिशाली देश है जो इन सभी घटनाओं पर संयत रूप से बयान और नजर रख रहा है। भारत का स्पष्ट संदेश है कि सर्वजन हिताय सर्वहित सुखाय सबका साथ सबका विश्वास यही नीति वैश्विक रूप से भारत चाहता है। वह किसी खेमे में न जाकर शांतिपूर्ण हल की बात कह रहा है।

वहीं वेनेजुएला पर अमेरिका के संभावित या अप्रत्यक्ष हमलों की चर्चा जब भी होती है, तो सबसे पहले दिमाग में जो शब्द उभरता है वह है-तेल। यह कोई संयोग नहीं है। वेनेजुएला वह देश है जिसकी धरती के नीचे दुनिया के सबसे बड़े सिद्ध आरक्षित तेल भंडार मौजूद हैं, और यही संसाधन उसे समृद्धि के साथ-साथ अभिशाप भी देता है। अमेरिका, जो स्वयं को लोकतंत्र और मानवाधिकारों का वैश्विक रक्षक घोषित करता है, वेनेजुएला के मामले में बार-बार आक्रामक रुख अपनाता रहा है। आधिकारिक बयान हमेशा यही कहते हैं कि वेनेजुएला में लोकतंत्र खतरे में है, तानाशाही है, जनता पीड़ित है, लेकिन इन तर्कों के पीछे छिपे आर्थिक और सामरिक हितों को नजरअंदाज करना बौद्धिक बेईमानी होगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कार्यवाहियां विश्व में उथल-पुथल मचा रही है। सबको साथ लेकर चलने की बजाय केवल तानाशाही और निरंकुश अमेरिका फर्स्ट की नीति को रखते हुए जो वह अपने प्लानिंग कर रहे हैं वह अमेरिका के साथ साथ वैश्विक रूप से बहुत घातक साबित हो सकती है।

ह्यूगो चावेज और बाद में निकोलस मादुरो की सरकारों ने जब तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया और अमेरिकी कंपनियों के वर्चस्व को चुनौती दी, तभी से वेनेजुएला अमेरिका की आँख की किरकिरी बन गया। अमेरिका की आदत रही है कि जो सरकारें उसके आर्थिक हितों के अनुकूल नहीं होतीं, उन्हें वह अलोकतांत्रिक घोषित कर देता है। वेनेजुएला में हालात सचमुच खराब हैं-महंगाई, बेरोजगारी, पलायन और राजनीतिक दमन-लेकिन यह सवाल बार-बार उठता है कि क्या इन हालातों को सुधारने का एकमात्र अमेरिकी प्रतिबंधों की भी बड़ी भूमिका है। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद यह पूरा मसला और अधिक कड़वा तथा असंयमित हो गया। ट्रंप की राजनीति गंभीर कूटनीति से ज्यादा व्यक्तिगत अहंकार, आक्रामक भाषा और दिखावटी मर्दानगी पर टिकी रही। वेनेजुएला के मामले में भी उन्होंने वही किया। खुलेआम सैन्य हस्तक्षेप की धमकियाँ, ₹सारे विकल्प खुले हैं₹ जैसे बयान, और खुद को दुनिया का मालिक समझने वाला रवैया-यह सब ट्रंप की उसी ठरकी मानसिकता का विस्तार था जिसमें ताकत का प्रदर्शन ही समाधान माना जाता है। वे न तो लैटिन अमेरिका के इतिहास की जटिलताओं को समझना चाहते थे, न ही आम वेनेजुएलाई नागरिकों की पीड़ा से उन्हें कोई वास्तविक सरोकार था। उनके लिए वेनेजुएला एक ऐसा मंच था जहाँ वे घरेलू राजनीति के लिए सख़्त नेता बनने का तमगा हासिल कर सकते थे और तेल लॉबी को भी खुश रख सकते थे।

ट्रंप प्रशासन के दौरान लगाए गए कड़े आर्थिक प्रतिबंधों ने वेनेजुएला की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। तेल बेचने पर रोक, बैंकिंग व्यवस्था से बाहर करना और अंतरराष्ट्रीय लेन-देन को लगभग असंभव बना देना-यह सब बिना गोली चलाए युद्ध लड़ने जैसा था। इसके परिणामस्वरूप ₹सरकार से ज्यादा आम जनता प्रभावित हुई। दवाइयों की कमी, भोजन का संकट और जीवन स्तर में गिरावट ने यह सवाल और तीखा कर दिया कि क्या यह सब सच में लोकतंत्र लाने के लिए किया जा रहा है या फिर जनता को इतना तोड़ने के लिए कि सत्ता परिवर्तन अपने आप हो जाए।

यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वेनेजुएला केवल तेल का मामला नहीं है, बल्कि भू-राजनीति का भी अखाड़ा है। रूस और चीन जैसे देशों की बढ़ती मौजूदगी अमेरिका को असहज करती है। ट्रंप जैसे नेता के लिए यह असहजता और भी निजी हो जाती है, क्योंकि वे दुनिया को शतरंज की बिसात की तरह देखते हैं, जहाँ हर चाल शक्ति प्रदर्शन से जुड़ी होती है। ऐसे में वेनेजुएला पर सख़्ती दिखाना उनके लिए ₹अल्फा लीडर₹ बनने का आसान तरीका था। फिर भी, यह कहना कि अमेरिका का हर कदम सिर्फ़.तेल के लिए है, पूरी सच्चाई नहीं होगी, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि अगर वेनेजुएला के पास तेल न होता, तो शायद उसे बचाने या सुधारने की इतनी बेचैनी अमेरिका को कभी न होती। ट्रंप की आक्रामक, आत्ममुग्ध और कई बार हास्यास्पद लगने वाली भूमिका ने इस पूरे संघर्ष को और अधिक खतरनाक बना दिया, जहाँ कूटनीति की जगह धमकी और संवाद की जगह दबाव ने ले ली। अंततः इस पूरी कहानी में सबसे दुखद पक्ष यह है कि सत्ता की इस वैश्विक खींचतान में वेनेजुएला का आम नागरिक पिसता है। उसके लिए यह अमेरिका बनाम मादुरो या ट्रंप बनाम समाजवाद का संघर्ष नहीं, बल्कि रोजमर्रा की ज़िंदगी की लड़ाई है। वेनेजुएला पर अमेरिका की नीति, खासकर ट्रंप के दौर में, यह दिखाती है कि जब राजनीति में संसाधन, अहंकार और शक्ति की भूख मिल जाती है, तो लोकतंत्र और मानवाधिकार केवल भाषणों तक सीमित रह जाते हैं।

निकोलस मादूरो की सत्ता फिलहाल जितनी कमजोर दिखती है, उतनी अस्थिर नहीं है। इसकी सबसे बड़ी वजह है सेना का समर्थन। जब तक वेनेजुएला की सेना मादूरो के साथ खड़ी है, तब तक किसी भी बाहरी या आंतरिक दबाव से सत्ता परिवर्तन होना बेहद कठिन है। विपक्ष बिखरा हुआ है, उसके पास न तो कोई सर्वमान्य नेतृत्व है और न ही जनता का वह जोश, जो किसी निर्णायक बदलाव को जन्म दे सके।

हाल के वर्षों में मादूरो ने एक बात अच्छी तरह सीख ली है-सत्ता बचाने की कला। उन्होंने चुनावी प्रक्रिया पर पकड़ मजबूत की, संस्थानों को अपने अनुकूल रखा और अमेरिका के दबाव के बावजूद रूस, चीन और ईरान जैसे देशों के साथ रिश्ते और गहरे किए। आर्थिक संकट के बीच भी उन्होंने सीमित स्तर पर बाजार को ढील देकर हालात को पूरी तरह विस्फोटक होने से रोका है। इसलिए निकट भविष्य में मादूरो का अचानक पतन संभव नहीं दिखता। हालाँकि इसका यह मतलब नहीं कि उनकी स्थिति मजबूत है। जनता का असंतोष गहरा है, वैधता पर सवाल बने हुए हैं और अर्थव्यवस्था अब भी नाजुक है। मादूरो शायद सत्ता में बने रहें, लेकिन कमजोर, विवादित और अंतरराष्ट्रीय दबाव में घिरे हुए नेता के रूप में। अब सवाल अमेरिका का है। सीधा सैन्य हमला आज के दौर में अमेरिका के लिए न तो व्यावहारिक है और न ही राजनीतिक रूप से फायदेमंद। इराक और अफगानिस्तान के अनुभवों ने यह साफ कर दिया है कि सैन्य दखल लंबे समय तक फँसने का रास्ता खोल देता है। इसलिए अमेरिका की रणनीति आगे भी प्रत्यक्ष युद्ध से बचते हुए अप्रत्यक्ष दबाव की ही रहेगी। सबसे पहला हथियार रहेगा- आर्थिक प्रतिबंध। अमेरिका इन्हें कभी कड़ा करेगा, कभी ढीला, ताकि मादूरो सरकार पर दबाव बना रहे और साथ ही बातचीत की गुंजाइश भी खुली रहे। हाल के संकेत बताते हैं कि अमेरिका ₹सब या कुछ नहीं की नीति के बजाय सौदेबाजी की राह पर चल सकता है-जैसे चुनावी सुधारों या विपक्ष को कुछ जगह देने के बदले प्रतिबंधों में राहत। दूसरी रणनीति होगी राजनयिक अलगाव। अमेरिका लैटिन अमेरिकी देशों और यूरोपीय सहयोगियों के साथ मिलकर मादूरो सरकार को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर घेरने की कोशिश करता रहेगा, ताकि उसे वैध नेतृत्व के रूप में पूरी स्वीकृति न मिल सके।

तीसरा और अहम पहलू है तेल। वैश्विक ऊर्जा बाजार में उतार-चढ़ाव के कारण अमेरिका पूरी तरह वेनेजुएला के तेल से मुँह नहीं मोड़ सकता। इसलिए भविष्य की अमेरिकी नीति दोहरी हो सकती है-एक तरफ मादूरो पर दबाव, दूसरी तरफ सीमित स्तर पर तेलसौदों की अनुमति, ताकि अपने आर्थिक हित भी सुरक्षित रखे जा सकें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरी रणनीतिक लड़ाई में स्पष्ट विजेता कोई नहीं दिखता। मादूरो सत्ता में रह सकते हैं, लेकिन स्थिरता और समृद्धि के बिना। अमेरिका दबाव बनाए रख सकता है, लेकिन मनचाहा सत्ता परिवर्तन सुनिश्चित नहीं कर सकता। और इस सबके बीच वेनेजुएला की आम जनता लगातार कीमत चुकाती रहेगी। संक्षेप में कहा जाए तो मादूरो का भविष्य निकट समय में सत्ता से बाहर होने का नहीं, बल्कि दबाव में टिके रहने का है, और अमेरिका की आगे की रणनीति खुले युद्ध की नहीं, बल्किलंबी और थकाने वाली घेराबंदी की होगी- जहाँ तेल, कूटनीति और प्रतिबंध तीनों साथ-साथ चलेंगे।

धरती के नीचे सोना ऊपर लोकतंत्र का शोर

तेल की खुशबू में लिपटा है सत्ता का हर एक दौर

वेनेजुएला रोता रहा ताकत चलती रही चाल

झंडों के पीछे छुपा हुआ तेल ही है असली बवाल।।

पढ़ाई के नाम पर बच्चों से छिनता बचपन

-प्रियंका सौरभ

अखबार की एक छोटी-सी खबर कई बार पूरे समाज के चेहरे से नकाब हटा देती है। ‟पढ़ाई के लिए कहने और रील बनाने से रोकने पर किशोर छोड़ रहे घर‟—यह वाक्य सिर्फ़. सूचना नहीं, बल्कि हमारे समय की एक गहरी त्रासदी का बयान है। यह बताता है कि घर, जो बच्चों के लिए सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है, कई मामलों में उनके लिए असहनीय दबाव का केंद्र बनता जा रहा है। पढ़ाई, अनुशासन और भविष्य की चिंता—ये सब आवश्यक हैं, लेकिन जब ये डर, ताने, अपमान और तुलना के साथ बच्चों पर थोपे जाते हैं, तो नतीजा सीखने की प्रेरणा नहीं, बल्कि पलायन होता है। यह खबर हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करती है कि आखिर हम अपने बच्चों से क्या चाहते हैं—अंक, रैंक और प्रदर्शन या एक संतुलित, संवेदनशील और स्वस्थ मनुष्य?

आज का किशोर अभूतपूर्व बदलावों के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल दुनिया ने उसकी आंखों के सामने विकल्पों का विस्तार कर दिया है—रील्स, शॉर्ट वीडियो, ऑनलाइन दोस्ती, त्वरित प्रसिद्धि और तुरंत मिलने वाली प्रशंसा। यह सब आकर्षक है, पर इसके भीतर अस्थिरता भी है। ऐसे में परिवार की भूमिका और भी निर्णायक हो जाती है। दुर्भाग्य से कई घरों में संवाद की जगह आदेश ने ले ली है, समझ की जगह तुलना ने, और सहानुभूति की जगह अपेक्षाओं ने। ‟हम तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं—यह वाक्य अक्सर बच्चों के मन में भय बनकर उतरता है, क्योंकि इसके साथ उनकी बात सुनने की इच्छा नहीं जुड़ी होती।

पढ़ाई को लेकर समाज में एकांगी दृष्टि विकसित हो गई है। सफलता का पैमाना सीमित कर दिया गया है—अच्छे अंक, प्रतिष्ठित कॉलेज और तथाकथित सुरक्षित करियर। इस दौड़ में यह भूल जाता है कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। किसी की रुचि विज्ञान में है, किसी की कला में; कोई खेल में खिलता है, कोई लेखन में। जब एक ही साँचे में सबको ढालने की कोशिश होती है, तो कई बच्चे टूटते हैं। वे अपनी असफलता को निजी अपराध मानने लगते हैं और धीरे-धीरे आत्मविश्वास खो देते हैं। घर छोड़ना उस टूटन का चरम बिंदु है—एक हताश प्रयास, जहाँ बच्चा भागकर शांति ढूंढना चाहता है। किशोरावस्था वैसे ही भावनात्मक उथल-पुथल का समय है। शरीर बदलता है, मन सवालों से भरता है, पहचान गढ़ने की बेचैनी होती है। ऐसे समय में अगर घर में डांट, चिल्लाहट, तिरस्कार और निरंतर निगरानी का माहौल हो, तो बच्चा खुद को अकेला महसूस करता है। उसे लगता है कि उसकी भावनाओं की कोई कीमत नहीं। कई बार माता-पिता बच्चों की चुप्पी को अनुशासन समझ लेते हैं, जबकि वह भीतर जमा होता तनाव होता है। यह तनाव कब विस्फोट बन जाए—घर छोड़ने, नशे की ओर जाने या आत्म-क्षति तक—कहना मुश्किल है।

रील्स और सोशल मीडिया को इस समस्या का एकमात्र दोषी ठहराना भी सरलीकरण होगा। यह सच है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों की एकाग्रता और धैर्य को प्रभावित करता है, लेकिन सवाल यह है कि बच्चे स्क्रीन में शरण क्यों लेते हैं? अक्सर इसलिए क्योंकि वहाँ उन्हें सुना जाता है, सराहा जाता है, या कम-से-कम जज नहीं किया जाता। अगर घर में संवाद जीवित हो, साझा समय हो, और भरोसे का रिश्ता हो, तो डिजिटल आकर्षण संतुलन में रहता है। समस्या तकनीक नहीं, तकनीक के साथ हमारे रिश्ते की है। माता-पिता की चिंता स्वाभाविक है। वे अपने अनुभवों से सीखकर बच्चों को कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं। पर चिंता जब नियंत्रण में बदल जाती है, तब नुकसान होता है। बच्चों के शौक छीन लेना, दोस्तों से मिलना रोकना, हर समय तुलना करना—ये तरीके अल्पकाल में अनुशासन जैसे दिख सकते हैं, पर दीर्घकाल में विश्वास तोड़ देते हैं। बच्चा आज्ञाकारी दिखे, पर भीतर विद्रोह पनपता रहता है। पढ़ाई के प्रति प्रेम डर से नहीं, अर्थ से पैदा होता है—जब बच्चा समझता है कि वह क्यों पढ़ रहा है, किस दिशा में बढ़ रहा है। स्कूल और शिक्षण संस्थानों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं। परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था बच्चों को अंक मशीन बना देती है। काउंसलिंग, लाइफ स्किल्स और मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर निवेश अभी भी अपवाद है। शिक्षक अक्सर पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में बच्चों की भावनात्मक जरूरतों को नहीं देख पाते। स्कूल और घर अगर मिलकर एक सहायक तंत्र बनाएं—जहाँ बच्चे की रुचि, क्षमता और मानसिक स्थिति पर संवाद हो—तो बहुत-सी त्रासदियाँ रोकी जा सकती हैं। समाज में सफलताओं का प्रदर्शन और असफलताओं का उपहास भी समस्या को बढ़ाता है। रिश्तेदारों की तुलना, पड़ोस की अपेक्षाएँ, सोशल मीडिया पर उपलब्धि का शोर—ये सब माता-पिता के दबाव को कई गुना कर देते हैं, जो आगे बच्चों पर उतरता है। हमें सामूहिक रूप से यह स्वीकार करना होगा कि हर रास्ता एक जैसा नहीं होता और देर से खिलने वाले फूल भी सुगंध बिखेरते हैं। जीवन रैखिक नहीं है; उसमें ठहराव, मोड़ और पुनः शुरूआत भी होती है। मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चुप्पी सबसे खतरनाक है। बच्चों की उदासी, चिड़चिड़ापन, नींद में बदलाव, पढ़ाई से अचानक दूरी—ये सब संकेत हैं, जिन्हें नाटक या जिद कहकर टाल देना आसान है। लेकिन समय रहते संवेदनशील हस्तक्षेप—एक शांत बातचीत, बिना टोके सुनना, जरूरत पड़े तो पेशेवर काउंसलिंग—कई जिंदगियाँ बचा सकता है। काउंसलिंग कोई कलंक नहीं, बल्कि समझदारी का कदम है।

घर के भीतर संवाद की संस्कृति बनाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। रोज का साझा समय—बिना मोबाइल, बिना आदेश—जहाँ बच्चा अपने दिन, डर और सपने कह सके। माता-पिता का यह स्वीकार करना कि उनसे भी गलती हो सकती है, बच्चों को ईमानदार बनाता है। नियम जरूरी हैं, पर नियमों के पीछे कारण बताना और बच्चों की राय सुनना उतना ही जरूरी है। अनुशासन सहमति से आए, भय से नहीं। नीतिगत स्तर पर भी पहल आवश्यक है। स्कूलों में प्रशिक्षित काउंसलर, माता-पिता के लिए नियमित कार्यशालाएँ, पाठ्यक्रम में जीवन-कौशल और भावनात्मक शिक्षा का समावेश—ये कदम समय की मांग हैं। डिजिटल साक्षरता केवल तकनीक चलाना नहीं, बल्कि उसकी सीमाएँ समझना भी है। बच्चों को स्वयं-नियमन सिखाना होगा, ताकि वे स्क्रीन और पढ़ाई के बीच संतुलन बना सकें। अंततः प्रश्न यह है कि हम किस तरह का समाज बनाना चाहते हैं। ऐसा समाज जो बच्चों को डराकर सफल बनाता है, या ऐसा जो उन्हें समझकर सक्षम बनाता है? घर छोड़ते किशोर हमारी सामूहिक विफलता का संकेत हैं। यह केवल किसी एक परिवार की कहानी नहीं, बल्कि हमारी प्राथमिकताओं का आईना है। अगर आज हम नहीं रुके, नहीं सुना, नहीं बदले—तो खबरें और भी कड़वी होंगी।

हमें याद रखना चाहिए कि बच्चे भविष्य नहीं, वर्तमान हैं। उनकी हँसी, जिज्ञासा और असहमति—सब जीवन का हिस्सा हैं। पढ़ाई महत्वपूर्ण है, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है वह वातावरण जिसमें पढ़ाई होती है। जब घर दोस्ती, सम्मान और भरोसे का स्थान बनेगा, तब बच्चे भागेंगे नहीं—वे वहीं रहकर उड़ान भरेंगे। यही समय की सबसे बड़ी पुकार है, और यही हमारे हाथ में सबसे बड़ी जिम्मेदारी।

डिजिटल युग में हिंदी: विश्व हिंदी दिवस 2026 का संदेश

प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।यह दिवस मात्र एक तारीख नहीं है, अपितु यह तो हमारे देश के भाषाई आत्मसम्मान का बड़ा उत्सव है। पाठकों को बताता चलूं कि राष्ट्रीय हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है, जैसा कि भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था तथा यह मुख्य रूप से भारत में हिंदी भाषा की मान्यता पर केंद्रित है।हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्यों की बात करें तो इसमें क्रमशः हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करना, ?दुनिया भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना, ?अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना, संयुक्त राष्ट्र में इसे आधिकारिक भाषा बनाना तथा ?विदेशी लोगों में हिंदी के प्रति अधिकाधिक रुचि पैदा करना प्रमुख हैं।सरल शब्दों में कहें तो इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान देना और इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है।हिंदी न केवल हमारे देश प्राचीन संस्कृति और ज्ञान की संवाहक है, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी इसका महत्त्वपूर्ण और अहम योगदान, भूमिका रही है। हिंदी आज हमारे देश की राजभाषा (आफिशियल लैंग्वेज) तथा भारत की प्रमुख मातृभाषा है। विश्व हिंदी दिवस के इतिहास की यदि हम यहां पर बात करें तो 10 जनवरी 1975 को नागपुर (महाराष्ट्र) में पहला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' आयोजित किया गया था तथा इसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था, जिसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। गौरतलब है कि वर्ष 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को प्रतिवर्ष 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नॉर्वे में भारतीय दूतावास द्वारा पहली बार विदेश में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया था। वास्तव में, यह उस दिन को चिह्नित करता है जब वर्ष 1949 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली) में पहली बार हिंदी बोली गई थी। यह विश्व के विभिन्न हिस्सों में स्थित भारतीय दूतावासों द्वारा भी मनाया जाता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में मॉरीशस के पोर्ट लुइस में विश्व हिंदी सचिवालय भवन का भी उद्घाटन किया गया था।हर साल इस दिवस की एक थीम या विषय रखा जाता है और वर्ष 2025 में इसका विषय 'हिंदी: एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज' रखी गई थी। वास्तव में, यह थीम हिंदी को एक वैश्विक संवाद, संस्कृति और एकता के माध्यम के रूप में उभारने पर केन्द्रित थी। इस वर्ष यानी कि वर्ष 2026 में इसकी थीम/विषय 'हिंदी: पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) तक' रखी गई है।यह थीम इस बात पर जोर देती है कि हिंदी न केवल हमारी प्राचीन संस्कृति और ज्ञान की संवाहक है, बल्कि आधुनिक युग में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' और डिजिटल तकनीक के क्षेत्र में भी पूरी तरह सक्षम और प्रगतिशील है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसका उद्देश्य है कि हिंदी पारंपरिक रूप से एक भाषा होने के साथ तकनीक की दुनिया में भी आगे है। इस भाषा को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। बहरहाल पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविंददास ने हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के क्रम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है तथा हिन्दी हमारे देश के संविधान की आठवीं अनुसूची की भाषा भी है। साथ ही, अनुच्छेद 351 'हिंदी भाषा के विकास के लिये निर्देश' से संबंधित है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तथा अनुच्छेद 120 तथा अनुच्छेद 210 भी हिंदी से संबंधित हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 भारत संघ की राजभाषा के निर्धारण से संबंधित एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रावधान है। इसके पहले खंड (343-1) में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि 'संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।' इसके साथ ही, सरकारी कार्यों में उपयोग किए जाने वाले अंकों का स्वरूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप (1, 2, 3 आदि) होगा। कहना गलत नहीं होगा कि यह अनुच्छेद भारत की भाषाई विविधता को स्वीकार करते हुए हिंदी को केंद्र सरकार के आधिकारिक कामकाज की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित करता है। अनुच्छेद 343 के अन्य खंडों में संक्रमणकालीन (ट्रांजिशनल) व्यवस्था भी दी गई है। गौरतलब है कि संविधान के लागू होने के समय (26 जनवरी 1950) भारतीय संविधान में यह प्रावधान किया गया था कि अगले 15 वर्षों तक यानी कि 1965 तक संघ के सभी आधिकारिक कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग भी पहले की तरह जारी रहेगा, ताकि प्रशासनिक स्तर पर कोई बाधा न आए। हालांकि, संसद को यह शक्ति दी गई थी कि वह 15 वर्ष की अवधि के बाद भी कानून बनाकर अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रख सकती है, जिसके परिणामस्वरूप बाद में 'राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया। सरल शब्दों में कहें तो अनुच्छेद 343 वह संवैधानिक आधार है जो हिंदी को भारत की प्रशासनिक और राष्ट्रीय पहचान से जोड़ता है। बहरहाल, हिंदी भाषा की कई ऐसी अनूठी विशेषताएं हैं जो इसे विश्व की अन्य भाषाओं से अलग और वैज्ञानिक बनाती हैं। इसकी सबसे बड़ी खूबी इसकी ध्वन्यात्मकता है; यानी इसे जैसा लिखा जाता है, ठीक वैसा ही बोला भी जाता है। हिंदी की लिपि, देवनागरी, अत्यंत व्यवस्थित है, जिसमें स्वर और व्यंजनों को वैज्ञानिक आधार पर वर्गीकृत किया गया है। यह एक अत्यंत उदार,सरल,सहज, वैज्ञानिक शब्दावली लिए हुए बहुत ही शानदार भाषा है, जिसने समय के साथ संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ अरबी, फारसी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों को भी अपने भीतर सहजता से समाहित किया है।व्याकरण की दृष्टि से देखें तो हिंदी में संज्ञा और क्रिया का गहरा संबंध होता है और इसमें लिंग (स्त्रीलिंग-पुल्लिंग) व वचन के आधार पर क्रिया का रूप बदल जाता है, जो भाषा को एक लयबद्धता प्रदान करता है। साथ ही, हिंदी में संबोधन के लिए 'तू', 'तुम' और 'आप' जैसे शब्दों का वर्गीकरण हमारे समाज की शिष्टता और रिश्तों की मयार्दा को दशार्ता है। अपनी सरलता और व्यापकता के कारण ही यह न केवल साहित्य की भाषा है, बल्कि आज के दौर में तकनीक और सिनेमा के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। उल्लेखनीय है कि हिंदी शब्द का जन्म फारसी भाषा से हुआ है, जिसका अर्थ है 'सिंधु नदी के किनारे का क्षेत्र'। 11वीं सदी में जब तुर्की आक्रमणकारी भारत आए, तो उन्होंने यहाँ की भाषा को 'हिंदी' नाम दिया। हिंदी की विकास यात्रा सदियों पुरानी है; यह प्राचीन काल में 'अपभ्रंश' के रूप में प्रचलित थी, जिसका प्रमाण हमें कालिदास के नाटकों में भी मिलता है। आज हम जिस देवनागरी लिपि का प्रयोग करते हैं, वह भी लगभग 11वीं शताब्दी के आसपास अस्तित्व में आई थी।वर्तमान में, हिंदी भारत की राजभाषा है और देश के प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी के साथ इसका प्रमुख स्थान है। इसकी लोकप्रियता केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि गिरमिटिया मजदूरों और सांस्कृतिक प्रवास के कारण यह मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम और नेपाल जैसे कई देशों में भी सम्मान के साथ बोली जाती है। हिन्दी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह वर्तमान में एक शक्तिशाली वैश्विक भाषा के रूप में उभर चुकी है। वर्ष 2025-26 के नवीनतम आंकड़ों (जैसे एथनोलॉग) के अनुसार, हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बनी हुई है, जिसके बोलने वालों की कुल संख्या लगभग 60.9 करोड़ (609 मिलियन) से अधिक पहुँच गई है। वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी (1.5 अरब) और मंदारिन या मैंडरिन/चीनी (1.2 अरब) के बाद हिन्दी का ही स्थान आता है। दिलचस्प बात यह है कि दुनिया भर में हिन्दी के प्रसार की गति पिछले कुछ दशकों में अत्यंत तीव्र रही है, और जैसा कि इस आलेख में ऊपर भी चर्चा कर चुका हूं कि आज यह फिजी, मॉरीशस, नेपाल और गयाना जैसे देशों के अलावा अमेरिका और खाड़ी देशों में भी बड़े प्रवासी समुदाय द्वारा बोली जाती है। भारत के संदर्भ में बात करें, तो हिन्दी देश की सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषा है। 2011 की जनगणना के बाद से हिन्दी भाषियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है और वर्तमान अनुमानों के अनुसार, भारत की लगभग 44% से 53% आबादी हिन्दी को अपनी पहली, दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में उपयोग करती है। डिजिटल क्रांति ने भी हिन्दी को काफी बढ़ावा दिया है, इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिन्दी सामग्री की मांग और खपत में भारी उछाल आया है। कितनी अच्छी बात है कि आज हिंदी का प्रयोग केवल बोलचाल या साहित्य तक सीमित न रहकर जीवन के लगभग-लगभग हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में व्यापक रूप से हो रहा है। प्रशासनिक और न्यायिक क्षेत्र में हिंदी भारत की राजभाषा के रूप में केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों और संसदीय कार्यों का मुख्य आधार है। यह हमारे लिए गौरवान्वित महसूस करने की बात है कि आज शिक्षा के क्षेत्र में भी नई शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पालिसी) के आने के बाद अब इंजीनियरिंग और चिकित्सा (मेडिकल) जैसे तकनीकी विषयों की पढ़ाई भी हिंदी में शुरू हो चुकी है। मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में तो हिंदी का वर्चस्व निर्विवाद है, बॉलीवुड फिल्में, हिंदी समाचार चैनल और विभिन्न ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने इसे न केवल भारत के कोने-कोने तक, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय बना दिया है।तकनीकी और डिजिटल क्रांति ने हिंदी के प्रयोग को एक नई दिशा दी है। **-सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार**

टाटा मोटर्स ने पेट्रोल इंजन के साथ बहुप्रतीक्षित हैरियर और सफारी लॉन्च की

मुंबई। भारत में एसयूवी बनाने वाली अग्रणी कंपनी, टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स लिमिटेड (टीएमपीवी), ने आज 1.5लीटर हायपरआयन टर्बो-जीडीआई पेट्रोल इंजन वाली बहुप्रतीक्षित हैरियर और सफारी की कीमतों की घोषणा की है। सेगमेंट में प्रतिस्पर्धी कीमतों पर हैरियर पेट्रोल की कीमत 12.89 लाख (एक्स-शोरूम, नई दिल्ली) से शुरू होती है, जबकि सफारी पेट्रोल 13.29 लाख (एक्स-शोरूम, नई दिल्ली) से उपलब्ध है। टॉप सेगमेंट के लग्जरी फीचर्स से लैस, ये दोनों एसयूवी सैमसंग नियोक्यूएलईडी से संचालित 36.9 सेमी सिनेमैटिक इंफोटेनमेंट डिस्प्ले, इमर्सिव डॉल्बी एटमॉस ऑडियो, बिल्ट-इन डुअल डैश कैम और डीवीआर के साथ विजन-एक्स ई-आईआरवीएम, ऑटो रिवर्स डिप के साथ विजनसिंक मेमोरी ओआरवीएम और क्लियरव्यू डुअल कैमरा वॉशर जैसे इनोवेशन के साथ प्रीमियम एसयूवी स्पेस को फिर से परिभाषित करती हैं। सेगमेंट में सबसे अच्छी फ्यूल एफिशिएंसी देने के साथ, बिल्कुल नया 1.5लीटर हायपरआयन टर्बो-जीडीआई इंजन इंटेलिजेंट टेक्नोलॉजी से लैस है जो हैरियर और सफारी को प्रीमियम एसयूवी सेगमेंट को फिर से परिभाषित करने में सक्षम बनाता है। लेटेस्ट इंजन टेक्नोलॉजी और एआई और एमएल द्वारा संचालित यह इंजन बेजोड़ और बिना किसी समझौते के परफॉर्मेंस देता है, जो शहर में ड्राइविंग और हाईवे ड्राइव दोनों के लिए पॉवर और एफिशिएंसी के बीच सही संतुलन बनाता है। यह बेहतर राइड और हैंडलिंग, सेगमेंट में सबसे अच्छे एनवीएच लेवल के साथ प्रीमियम इन-केबिन शांति, और एक पॉवरट्रेन प्रदान करता है जिसे शहरी ट्रैफिक में एक सॉफिस्टिकेट राइड अनुभव प्रदान करने के लिए विशेष रूप से ट्यून किया गया है, साथ ही हाई स्पीड पर असाधारण स्थिरता भी मिलती है। ये खूबियां हर यात्रा को बेहतर बनाती हैं, जिससे हैरियर और सफारी इस सेगमेंट में अल्टिमेट चॉइस के रूप में मजबूती से स्थापित होती हैं। हैरियर और सफारी टीएमपीवी की सुरक्षा विरासत को बनाए हैं, अब हायपरआयन पेट्रोल इंजन द्वारा संचालित सभी वेरिएंट के लिए एकदम परफेक्ट 5-स्टार भारत एनसीएपी रेटिंग हासिल की है, जिससे पूरा हैरियर और सफारी पोर्टफोलियो 5-स्टार सर्टिफाइड हो गया है। हैरियर और सफारी के पोर्टफोलियो में बिल्कुल नए पॉवरट्रेन को शामिल करने पर टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के चीफ कमर्शियल ऑफिसर श्री विवेक श्रीवास्तव ने कहा, बाजार में 2.5 लाख से ज्यादा हैरियर और सफारी चल रही हैं और ये दोनों एसयूवी लंबे समय से टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स के डिजाइन, परफॉर्मेंस और सेफ्टी की विरासत को दिखाती रही हैं। बिल्कुल नया 1.5लीटर हायपरआयन टर्बो-जीडीआई पेट्रोल इंजन इन मार्केट-लीडिंग खूबियों को और आगे बढ़ाता है। हैरियर हमेशा से एक आइकॉनिक एसयूवी रही है जो अपने डायनामिक लुक और बोल्ड अंदाज के लिए जानी जाती है, जिसे अब हायपरआयन की बेजोड़ पावर और अपमार्केट ड्राइविंग अनुभव से और बेहतर बनाया गया है। दूसरी ओर, सफारी ने एक मजबूत विरासत के साथ एक पसंदीदा और प्रतिष्ठित हाई एसयूवी के रूप में इंडस्ट्री में अपनी जगह बनाई है, जिसे अब हायपरआयन की शांत, साइलेंट और टेक-रिच परफॉर्मेंस से और मजबूत किया गया है।

हेल एनर्जी ड्रिंक ने भारत को एक प्रमुख विकास इंजन के रूप में स्थापित किया

मुंबई। हेल एनर्जी ड्रिंक, दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते एनर्जी ड्रिंक ब्रांड्स में से एक, अपने वैश्विक सफर के 20 साल पूरे होने के अवसर पर एक महत्वपूर्ण एनिवर्सरी अभियान लॉन्च करके जश्न मना रहा है। यह अभियान उन लोगों, पलों और साझेदारियों को सम्मानित करता है जिन्होंने पिछले दो दशकों में ब्रांड के विकास को आकार दिया है, साथ ही इसके अगले विकास चरण के लिए दिशा भी तय करता है।

2006 में हंगेरी में स्थापित, हेल एनर्जी ड्रिंक ने एक महत्वाकांक्षी उद्यमिता परियोजना से लेकर एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त ब्रांड बनने तक की यात्रा की है, जो 60 से अधिक देशों में मौजूद है। भारत इस अंतरराष्ट्रीय विस्तार में एक प्रमुख केंद्रीय बाजार के रूप में उभरा है, जो युवाओं के बीच ऊर्जा, प्रदर्शन और आत्म-अभिव्यक्ति के अवसरों की मजबूत पसंद से प्रेरित है। वारस को मनाने के बजाय, यह 20 साल का चरण ब्रांड द्वारा विश्वभर में ग्राहकों, साझेदारों और समुदायों के साथ बनाए गए विश्वास और निष्ठा का प्रतिबिंब है। भारत में , हेल एनर्जी ड्रिंक खेल, संगीत, मनोरंजन, सिनेमा और यादगार सांस्कृतिक अनुभवों पर आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवाओं के साथ अपने संबंध को मजबूत करता रहता है, और तेजी से बदलते उपभोक्ता परिदृश्य में अपनी स्थिरता को मजबूत करता है।

इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए, उनिकन्नन गंगाधरण, निदेशक, हेल-एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड ने कहा, 20 साल पूरे करना हेल एनर्जी ड्रिंक के लिए एक गर्वपूर्ण वैश्विक मील का पत्थर है। भारत हमारे लिए एक जीवंत और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है, जो मजबूत युवा संस्कृति और उच्च-ऊर्जा अनुभवों की बढ़ती इच्छा से आकार लिया गया है। यह वार्षिक विशेष वीडियो हमें अपने उपभोक्ताओं को उनके लगातार विश्वास के लिए धन्यवाद देने का अवसर देता है और उन्हें ब्रांड के अगले विकास चरण का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करता है।

विकास खन्ना ने इस जोड़े के प्यार को कहा दुर्लभ, मास्टरशेफ इंडिया ने मनाई जोड़ियों की खुशियां

मुंबई/पटना। जैसे ही मास्टरशेफ इंडिया अपने बहुप्रतीक्षित प्रीमियर के साथ शुरू होता है, नया सीजन केवल प्रतिभा ही नहीं बल्कि उन मानवीय कहानियों का भी उत्सव मनाता है जो देश के हर कोने से आती हैं। ऐसा ही एक दिल छू लेने वाला पल सामने आता है एक जोड़े–मयंक राजा और अल्पना अग्रवाला–के साथ, जिनकी यात्रा 33 वर्षों के विवाह और तीन वर्षों के प्रेमालाप को समेटे हुए है, और जिनका साझा प्रेम हमेशा से रसोई के लिए रहा है। इस जोड़ी की केमिस्ट्री तुरंत ही महसूस की जा सकती है। दशकों से एक-दूसरे को पूरी तरह जानने के बाद, वे स्नेहपूर्वक स्वीकार करते हैं कि भोजन हमेशा उनके रिश्ते के केंद्र में रहा है। उनकी इस गहरी जुड़ाव से प्रभावित होकर शेफ कुणाल कपूर ने कहा, ह्यघर में सबसे महत्वपूर्ण जगह रसोई होती है। आपने रसोई का ध्यान रखा है और अपने परिवार का भी ध्यान रखा है। हम देख सकते हैं कि 33 साल बाद भी आप दोनों एक-दूसरे के साथ कितने खुश हैं।

पल जल्द ही हल्का-फुल्का हो गया, जब शेफ कुणाल ने अपने साथी जजों को चिढ़ाया। शेफ रणवीर बरार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने पूछा कि वे कितने साल से विवाहित हैं। रणवीर ने सहजता से जवाब दिया, बारह साल,ह्व और फिर मजाकिया अंदाज में जोड़ा, बेकार, असफल–मुझे नहीं लगता कि इस दुनिया में मुझसे ज्यादा बेकार पति कोई है। मैं धन्य हूं कि मेरी पत्नी मुझे पूरे दिन सहन करती है। कुणाल ने तुरंत ही मजाकिया अंदाज में कहा, मैं देख सकता हूं, मुझे पता है।यहीं नहीं रुके, उन्होंने मुस्कुराते हुए शेफ विकास खन्ना की ओर रुख किया और पूछा, विकास, देश जानना चाहता है–आप जोड़ी कब बनाएंगे? इस पर विकास ने गर्मजोशी और प्रशंसा के साथ उत्तर दिया, ऐसा प्यार कहाँ मिलेगा? यह दुर्लभ है।

विकास के मुद्दे पर लड़ेंगे चुनाव, एकनाथ शिंदे का विपक्ष को संदेश- हमें हल्के में न लें

मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को पुणे नगर निगम चुनाव से पहले पुणे में प्रचार किया और इस बात पर जोर दिया कि महायुति गठबंधन विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ रहा है और मुंबई और पुणे दोनों में विजयी होगा। कात्रज दौरे के दौरान मीडिया से बात करते हुए शिंदे ने कहा कि उन्हें किसी भी पार्टी कार्यकर्ता द्वारा दिए गए बयानों की जानकारी नहीं है, लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी पूरी ताकत से चुनाव लड़ रही हैं। उन्होंने कहा, ह्हम विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ रहे हैं।ह उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में उनके ढाई साल के कार्यकाल में किए गए कार्यों के साथ-साथ पिछले एक साल में उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में किए गए कार्यों को सीधे जनता तक पहुंचाया जा रहा है।

मुंबई में चुनाव परिणामों को लेकर विश्वास जताते हुए शिंदे ने कहा कि मतदाता विकास कार्यों पर आधारित महायुति गठबंधन के पक्ष में मतदान करेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा, मैं इसे एक शब्द में कहूँ तो, मुंबई के मेयर महायुति गठबंधन से

ही होंगे। पुणे नगर निगम चुनावों पर शिंदे ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक बेहद उत्साहित हैं। उन्होंने बताया कि पुणे के कुछ क्षेत्रों में महायुति सहयोगी एक साथ चुनाव लड़ रहे हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में वे अलग-अलग चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, ह्पुणे में शिवसेना स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ रही है और हमारे कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह है।

वे हर हाल में यह चुनाव जीतने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। नागरिक मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए, शिवसेना प्रमुख ने कहा कि उनकी पार्टी यातायात, जल आपूर्ति और बुनियादी नागरिक सुविधाओं से संबंधित समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित करेगी। उन्होंने पुणे को झुग्गी-मुक्त शहर बनाने के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि विकास शिवसेना के एजेंडे का मूल आधार है। शिंदे ने कहा, विपक्ष को हमें हल्के में नहीं लेना चाहिए। शिवसेना एक मजबूत पार्टी है।

उन्होंने आगे कहा कि पार्टी ने महाराष्ट्र भर में अपनी उपस्थिति का विस्तार किया है, जिससे यह धारणा गलत साबित होती है कि पार्टी कुछ चुनिंदा क्षेत्रों तक ही सीमित है। गौ संरक्षण के मुद्दे पर टिप्पणी करते हुए शिंदे ने कहा कि उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान ही गौ माता को 'राज्य माता' का दर्जा दिया गया था।

घाटकोपर में एसी कंप्रेसर का विस्फोट, घर का सामान जलकर खाक

मुंबई (उत्तरशक्ति)। घाटकोपर के पाटीदार हॉल परिसर स्थित शिवनगर में एस. आर. ए बिल्डिंग के सी-विंग, कक्ष क्रमांक 306 की गैलरी में लगे एसी के कंप्रेसर में विस्फोट होने से अचानक आग लगने की घटना सामने आई। यह आग बुधवार देर रात करीब 12.30 बजे लगी।

तीसरी मंजिल पर लगी आग कुछ ही समय में चौथी मंजिल तक फैल गई। घटना की जानकारी मिलते ही अग्निशमन दल और घाटकोपर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। अग्निशमन दल के जवानों ने कड़ी मशक्कत के बाद कई घंटों में आग पर काबू पाया।

इस हादसे में किसी प्रकार की जानहानि नहीं हुई, लेकिन घर में रखा फर्नीचर और अन्य घरेलू सामान भारी मात्रा में जलकर नष्ट हो गया। प्राथमिक जांच में आग लगने का मुख्य कारण एसी कंप्रेसर का विस्फोट बताया जा रहा है। मामले की आगे की जांच जारी है, ऐसी जानकारी घाटकोपर पुलिस थाने के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक सतीश जाधव ने दी है।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने एडवांटेज महाराष्ट्र 2026 में तकनीकी उत्कृष्टता पेश की

मुंबई (उत्तरशक्ति)। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने एडवांटेज महाराष्ट्र एक्सपो 2026 में हिस्सा लिया है। इस उपस्थिति से कंपनी ने पर्यावरण के अनुकूल गाड़ियां चलाने, जिम्मेदारी से सामान बनाने और महाराष्ट्र में कौशल विकास पहलों के माध्यम से युवा सशक्तिकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता मजबूत की है। टोयोटा की एक्सपो में भागीदारी फ्लेक्स-फ्यूल स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन तकनीक की ताकत को बताता है। उनके पैविलियन में टीकेएम का अन्य कंपनियों से सहयोग करने और नई तकनीकों के बारे में जागरूक रहने का तरीका देखने को मिला, जो भारत के ऊर्जा बदलाव के लक्ष्यों से बखूबी मेल खाता है।

एडवांटेज महाराष्ट्र एक्सपो 2026 छत्रपति संभाजीनगर और मराठवाड़ा क्षेत्र में सबसे बड़े उद्योग एक्सपो में से एक है, जो हर तीन साल में आयोजित होता है। यह एक्सपो मासिया (मराठवाड़ा एसोसिएशन ऑफ स्मॉल-स्केल इंडस्ट्रीज एंड एग्रीकल्चर), एक प्रमुख उद्योग निकाय, द्वारा महाराष्ट्र सरकार के सहयोग में आयोजित किया जाता है।

टेक्नोलॉजी पैविलियन में, टीकेएम ने अपनी उन्नत वाहन तकनीकों का एक विशेष रूप से तैयार डिस्प्ले प्रस्तुत किया, जिसमें हाईक्रॉस फ्लेक्सी-फ्यूल स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इलेक्ट्रिक व्हीकल शामिल है। यह टीकेएम के दृष्टिकोण पर जोर देता है, और कार्बन न्यूट्रैलिटी हासिल करने के लिए कई रास्तों वाले दर्शन पर आधारित सोच को दिखाता है, जो पर्यावरण के अनुकूल गाड़ियां चलाने को संतुलित रखता है।

एक्सपो में जुड़ाव को और मजबूत करते हुए, टीकेएम ने उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिनिधियों के लिए टोयोटा कल्चर पर एक सत्र आयोजित किया। इस सत्र में टीकेएम के मूल मूल्यों जैसे गुणवत्ता-आधारित विनिर्माण, निरंतर सुधार, कौशल विकास और ग्राहक-केंद्रित नेतृत्व के बारे में बताया गया, जिसका उद्देश्य महाराष्ट्र में लंबी अवधि की साझेदारियों को और मजबूत करना है।

श्री सुदीप दलवी, चीफ कम्यूनिकेशन ऑफिसर, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट एवं डायरेक्टर, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने कहा, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर महाराष्ट्र सरकार का दिल से शुक्रिया अदा करता है कि उन्होंने राज्य में हमारी नई फैक्ट्री परियोजना को लगातार समर्थन दिया है। हमारी आगामी फैक्ट्री राज्य में टीकेएम की मौजूदगी को और मजबूत करेगी। यह स्थानीय सामान पर ज्यादा फोकस करेगी और स्थानीय विकास के लिए नए मौके पैदा करेगी। एडवांटेज महाराष्ट्र एक्सपो में हमारी भागीदारी से पता चलता है कि हम क्षेत्र में सहयोग से काम कर रहे हैं। यह महाराष्ट्र में लंबे समय तक चलने वाले विकास, नई खोजों और समुदाय को मजबूत बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को दिखाता है।

भिवंडी में स्वीप दल द्वारा विभिन्न स्थानों पर मतदाता जागरूकता अभियान में मतदान के लिए ली गयी शपथ

आचार्य सूरजपाल यादव

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी मनपा की सार्वत्रिक चुनाव प्रक्रिया के अंतर्गत आयुक्त अनमोल सागर, अतिरिक्त आयुक्त नयना ससाणे तथा स्वीप कक्ष के नोडल अधिकारी श्रीकांत परदेशी के मार्गदर्शन में शहर के नागरिकों को मतदान का महत्व समझाने के लिए विभिन्न स्थानों पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान करने की शपथ दिलाई जा रही है। गायत्रीनगर परिसर में तृतीय पंथ के लिए कार्यरत संस्था ह्यकिन्नर अस्मिताह्व के सहयोग से मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से

शपथ ग्रहण कर रैली निकाली गई। वहीं धामणकर नाका क्षेत्र में आम नागरिकों को मतदान के प्रति जागरूक करते हुए 15 जनवरी को अनिवार्य रूप से मतदान करने का आह्वान करते हुए नारे लगाए गए। इस अभियान में सहायक नोडल अधिकारी कल्पना तलपाड़े एवं राहुल नाडेकर सहित पंडित केणे, सनी ओव्हाळ, विक्की जाधव और पंकजकुमार राऊत उपस्थित रहे तथा सभी ने सक्रिय सहभाग लिया।

पश्चिम भारत में अवैध मच्छर-रोधी अगरबत्तियों का सबसे बड़ा बाजार बना महाराष्ट्र, गंभीर स्वास्थ्य संकट का खतरा बढ़ा

मुंबई। महाराष्ट्र पश्चिम भारत में अवैध मच्छर-रोधी अगरबत्तियों का सबसे बड़ा बाजार बनकर उभरा है, जिससे लोगों के स्वास्थ्य के लिए एक छुपा हुआ सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा खड़ा हो गया है। कानूनी मच्छर-रोधी समाधान प्रदान करने वाली कंपनियाँ और द होम इंसेक्ट कंट्रोल एसोसिएशन – जो भारत में घरेलू कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देने वाला एक गैर-लाभकारी उद्योग संगठन है – लगातार लोगों और अधिकारियों को ऐसी अवैध और अप्रूव न की गई मच्छर-रोधी अगरबत्तियों के खतरों के बारे में आगाह कर रहे हैं, जो गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करती हैं। भारत में अवैध मच्छर-रोधी अगरबत्तियों का बाजार लगभग 1,800 करोड़ रुपये से अधिक का है, जिसमें पश्चिम भारत का योगदान करीब 230 करोड़ रुपये है। इसमें अकेले महाराष्ट्र का लगभग 200 करोड़ रुपये का हिस्सा है, जिससे यह इन असुरक्षित और अवैध उत्पादों का सबसे बड़ा केंद्र बन गया है।

हर्बल या नेचुरल नाम से बेची जाने वाली ये अवैध अगरबत्तियाँ अक्सर अप्रूव न किए गए केमिकल्स से बनी होती हैं। लंबे समय तक इनके इस्तेमाल से सांस संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं, खासकर बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों में। ये अवैध अगरबत्तियाँ लोकल स्टोर्स, जनरल दुकानों और यहाँ तक कि फार्मेसीज में भी 10-15 रुपये की कीमत पर मिल जाती हैं, लेकिन लोग इस बात से अनजान रहते हैं कि ये अपने साथ उनके घरों में किस तरह का खतरा ला रही हैं।

केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति, जो कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत आती है, भारत में मच्छर भगाने वाली दवाओं में इस्तेमाल के लिए रसायनों को मंजूरी देने वाला प्राधिकरण है। किसी भी मच्छर-रोधी उत्पाद में इस्तेमाल होने वाले केमिकल को भारत में निर्माण, आयात या बिक्री से पहले CIBRC में पंजीकृत होना अनिवार्य है। सरकार द्वारा मंजूर उत्पादों पर उक्फ (सेंट्रल इंसेक्टिसाइड रजिस्ट्रेशन) नंबर पैकेजिंग पर दिया होता है, जो प्रामाणिकता और सुरक्षा की गारंटी देता है। अवैध मच्छर-रोधी अगरबत्तियों में यह मंजूरी नहीं होती। वे अनिवार्य तीन साल की सुरक्षा जाँच प्रक्रिया से बच निकलती हैं, पैकेजिंग पर कोई रजिस्ट्रेशन नंबर नहीं होता और इन्हें ऐसे निमार्ताओं द्वारा बनाया जाता है जिनकी कोई पहचान या जवाबदेही नहीं होती।

इस बढ़ते खतरे पर चिंता जताते हुए बॉम्बे हॉस्पिटल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के कंसल्टेंट बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. मुकेश संकलेचा ने कहाः धुँआ उत्पन्न करने वाले मच्छर-रोधी उत्पादों, जैसे बिना नियमन वाली अगरबत्तियों से सावधान रहें। ये अक्सर अवैध रूप से आयात किए गए और अप्रूव न किए गए केमिकल्स से बनती हैं। भले ही ये सस्ती लगें, लेकिन इनमें गुणवत्ता नियंत्रण नहीं होता और ये गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकती हैं। सुरक्षित और प्रभावी विकल्पों के लिए हमेशा केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति की ओर से स्वीकृत और विश्वसनीय ब्रांडों के उत्पादों का ही उपयोग करें। द होम इंसेक्ट कंट्रोल एसोसिएशन , एक गैर-लाभकारी संगठन जो राज्य और केंद्र सरकार के अधिकारियों के साथ मिलकर काम करता है, अवैध अगरबत्ती निमार्ताओं पर लगातार कार्रवाई कर रहा है। 2018 से 2024 के बीच, इस संगठन ने देशभर में 100 से अधिक छापों में मदद की है, जिनमें इन खतरनाक उत्पादों के निमार्ता, थोक व्यापारी और विक्रेता शामिल थे, साथ ही लोगों में जागरूकता बढ़ाई और सुरक्षा अनुपालन को बढ़ावा दिया।

सुरेश गोपी ने सभा को किया संबोधित

वसई रोड(उत्तरशक्ति)। वसई-विरार महानगरपालिका चुनाव के मद्देनजर महायुति के प्रचार को गति मिली है। केंद्रीय पर्यटन व पेट्रोलियम राज्य मंत्री और अभिनेता सुरेश गोपी ने वसई दौरे के दौरान वार्ड नंबर 26 के महायुति उम्मीदवारों के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन में महायुति का मेयर बनने से ही शहर का समग्र विकास संभव है।

सुरेश गोपी ने सबका साथ, सबका विकास के मंत्र के साथ महायुति को वोट देने की अपील की और वसई को एक बेहतर टूरिस्ट हब बनाने के लिए मास्टर प्लान की बात कही। शिवसेना विधायक राजेंद्र गावित ने पूर्व सत्ताधारियों पर विकास न करने का आरोप लगाया और ट्रैफिक, पानी व रेलवे से जुड़ी समस्याओं पर किए गए कार्यों का उल्लेख किया।

महायुति उम्मीदवार उत्तम कुमार ने दावा किया कि म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन में 100 प्रतिशत भाजपा का मेयर बनेगा और कहा कि वसई का विकास तभी संभव है जब भाजपा सत्ता में आए। सभा में बड़ी संख्या में महायुति कार्यकर्ता और साउथ इंडियन कम्युनिटी के सदस्य मौजूद रहे।

भाजपा को झटका, चार एनसीपी पार्षदों ने शिवसेना का समर्थन किया

मुंबई। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बड़ा झटका लगा है क्योंकि अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के चार पार्षदों ने अंबरनाथ नगर परिषद में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना का समर्थन करने का फैसला किया है। यह घटनाक्रम उन खबरों के बाद सामने आया है जिनमें कहा गया था कि भगवा पार्टी ने अंबरनाथ में शिवसेना को सत्ता से बाहर रखने के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन किया है, जिसे बाद में दोनों पक्षों ने खारिज कर दिया था। अंबरनाथ नगर परिषद में 60 पार्षद हैं। शिवसेना के 27 पार्षद हैं, उसके बाद भाजपा के 14 पार्षद हैं। कांग्रेस और एनसीपी के क्रमशः 12 और 4 पार्षद हैं। अब, शिवसेना के 27 पार्षदों को चार एनसीपी पार्षदों और एक निर्दलीय पार्षद का समर्थन प्राप्त है। कुल मिलाकर, शिवसेना को 32 पार्षदों का समर्थन प्राप्त है।

सूत्रों के अनुसार, एनसीपी के स्थानीय नेताओं ने कांग्रेस के साथ सत्ता साझा करने पर असुविधा व्यक्त की थी और पार्टी नेतृत्व को बताया था कि वे 2023 से ही अंबरनाथ में कांग्रेस का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने पार्टी नेतृत्व से कहा था कि कांग्रेस के साथ गठबंधन 'स्वीकार्य' नहीं है। इसलिए, पार्टी ने अब शिवसेना का समर्थन करने का निर्णय लिया है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि शिवसेना, भाजपा और एनसीपी महायुति गठबंधन का हिस्सा हैं, लेकिन अंबरनाथ नगर परिषद के चुनाव में गठबंधन ने अलग-अलग चुनाव लड़े थे।

अंबरनाथ में भाजपा-कांग्रेस गठबंधन ने महाराष्ट्र में कई लोगों को चौंका दिया, जिसके चलते मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को स्पष्टीकरण जारी करना पड़ा। फडणवीस ने बाद में कहा कि कांग्रेस के साथ कोई भी गठबंधन अस्वीकार्य है और अंबरनाथ में स्थानीय स्तर पर लिए गए फैसले को सुधारा जाएगा। 12 कांग्रेस पार्षदों की बात करें तो, वे भाजपा में शामिल हो गए हैं, जिससे भाजपा को एक और झटका लगा है। पार्टी ने अब इन सभी 12 पार्षदों - प्रदीप नाना पाटिल, दर्शना पाटिल, अर्चना चरण पाटिल, हर्षदा पंकज पाटिल, तेजस्विनी मिलिंद पाटिल, विपुल प्रदीप पाटिल, मनीष म्हात्रे, धनलक्ष्मी जयशंकर, संजीवनी राहुल देवड़े, दिनेश गायकवाड़, किरण बद्रीनाथ राठौड़ और कबीर नरेश गायकवाड़ - की अयोग्यता की मांग करने का फैसला किया है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

रिहायशी घर में लगी आग, गृहस्थी का सारा सामान जलकर हुआ खाक

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। तेजीबाजार थाना क्षेत्र के कालिंजरा बसरा में श्रीनाथ के घर में लगी आग गृहस्थी का सारा सामान जलकर हुआ राख। आज सुबह लगभग 10 बजे घर में बिजली कनेक्शन से तार शॉट हुआ और घर का सारा सामान जलकर राख हो गया। आग ने इतना विकराल रूप पकड़ लिया कि गांव के लोग पहुंच कर सबमरसेबल की मदद से आग को काबू पाया गया। वही श्रीनाथ चौहान पुत्र स्वर्गीय राम गोपाल चौहान के घर पर लगी है। से सब कुछ जलकर खाक हो गया है।

श्रीनाथ मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करते है। जिसकी सूचना मिलते ही तत्काल मौके पर पहुंचे एस आई जयप्रकाश सिंह, हेड कास्टेबल लव कुमार सिंह, कास्टेबल पंकज यादव, कास्टेबल विनय कुमार मौके पर पहुंच कर नुक्सान का जायजा लिए। आग को काबू पाने में काफी सहयोग किए। आग की सूचना मिलते ही क्षेत्रीय लेखपाल वीरेंद्र प्रताप मौके पर पहुंच कर नुक्सान का जायजा लिए। गांव के सभी लोगों ने आग बुझने के लगे रहे जैसे कि हरिशंकर यादव, विनय कुमार पाल, चंद्रशेखर चौहान, मेवालाल मौर्य, डब्लू मौर्य आदि लोग उपस्थित रहे।

23 साल पुराने जानलेवा हमले के केस में नया मोड़

धनंजय सिंह बनाम राज्य में सुप्रीम कोर्ट ने जारी किया नोटिस

वाराणसी में 2002 के एके-47 हमले से लेकर 2025 की बरी तक और अब सुप्रीम कोर्ट की दखल सवालों के घेरे में अभियोजन की भूमिका

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश की राजनीति और आपराधिक न्याय व्यवस्था से जुड़ा एक अत्यंत संवेदनशील और बहुचर्चित मामला एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आ गया है। वर्ष 2002 में तत्कालीन विधायक धनंजय सिंह पर वाराणसी में हुए जानलेवा हमले से संबंधित केस में अब सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप करते हुए अपील स्वीकार कर ली है और सभी संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया है। यह घटनाक्रम न केवल इस केस की दिशा बदल सकता है, बल्कि पीड़ितों के अपील अधिकार को लेकर भी महत्वपूर्ण सवाल खड़े कर रहा है।वर्ष 2002 में वाराणसी में धनंजय सिंह पर उस समय जानलेवा हमला किया गया था, जब वे सक्रिय राजनीति में थे। आरोप था कि हमलावरों ने एके-47 जैसे अत्याधुनिक स्वचालित हथियार का इस्तेमाल किया। यह घटना उस दौर में कानून-व्यवस्था और संगठित अपराध के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक मानी गई थी। मामले में कुख्यात गैंगस्टर अभय सिंह और उसके गिरोह के नाम सामने आए थे। जांच के दौरान वर्ष 2003 में यूपी पुलिस ने अभय सिंह (जिसे गैंग लीडर बताया गया) के पक्ष में फाइनल रिपोर्ट (एफआर) दाखिल कर दी, जबकि अन्य आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की गई। इस कदम को लेकर उस समय भी सवाल उठे थे कि क्या विवेचना निष्पक्ष और प्रभावी रही।लंबी न्यायिक प्रक्रिया के बाद वर्ष 2025 में वाराणसी की गैंगस्टर कोर्ट ने इस मामले में चार आरोपियों को बरी कर दिया। बरी किए गए आरोपियों में संदीप सिंह (अभय सिंह का साला), विनोद सिंह, संजय रघुवंशी, सतेंद्र सिंह उर्फ बब्लू शामिल हैं। अदालत ने अपने फैसले में अभियोजन की कमजोरियों और साक्ष्यों की कमी को आधार बताया।

इस फैसले के बाद कानूनी रूप से राज्य सरकार/अभियोजन पक्ष को उच्च न्यायालय में अपील दायर करनी थी, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। इसके बाद धनंजय सिंह ने स्वयं उच्च न्यायालय में अपील दाखिल की, जिसे यह कहते हुए खारिज कर दिया गया कि उन्हें बरी के आदेश के खिलाफ अपील करने का अधिकार नहीं है।

उच्च न्यायालय के इस आदेश को चुनौती देते हुए धनंजय सिंह ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। अब सर्वोच्च न्यायालय ने इस अपील को स्वीकार कर लिया है और सभी संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया है। इससे यह मामला एक बार फिर जीवित हो गया है।इस पूरे प्रकरण ने कई अहम सवाल खड़े कर दिए हैं, यदि अभियोजन पक्ष अपील नहीं करता, तो क्या पीड़ित न्याय के लिए पूरी तरह असहाय हो जाता है। क्या राज्य की निष्क्रियता पर न्यायालय हस्तक्षेप कर सकता है।

क्या गंभीर अपराधों में तकनीकी आधार पर न्याय समाप्त हो जाना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई अब सिर्फ इस केस तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह तय करेगी कि पीड़ित के अधिकार, राज्य की भूमिका और न्याय की अवधारणा को किस तरह परिभाषित किया जाएगा। 23 साल पुराने इस मामले में शीर्ष अदालत का फैसला भविष्य के कई मामलों के लिए नजीर बन सकता है। फिलहाल, पूरे देश की निगाहें सुप्रीम कोर्ट पर टिकी हैं, जहाँ यह तय होगा कि वाराणसी के इस पुराने लेकिन गंभीर मामले में न्याय की प्रक्रिया को एक नई दिशा मिलेगी या नहीं।

विवाहिता ने लगायी फांसी, हुई मौत, हत्या या आत्महत्या सुलझाने में जुटी पुलिस

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। चन्दवक थाना क्षेत्र के हीरापुर मचहटी में उस समय हड़कंप मच गया जब संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता का शव फांसी के फंदे पर लटकते हुए मिलने की सूचना मिली। देखते ही देखते घटना पूरे गांव में आग की तरह फैल गई। मृतका के पिता ने ससुराल वालों पर फांसी लगाकर हत्या करने का आरोप लगाया।

प्राप्त जानकारी अनुसार बुधवार को मृतका अफसाना और परिवार के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी। मृतका अपने 3 वर्ष के पुत्र असद के साथ सो गयी। आधी रात बाद अचानक असद को रोता सुन पिता सलमान उठा और देखा कि बेड पर असद अकेला है। सलमान असद को लेकर अफसाना को ढूढ़ने लगा। जैसे ही पास के दुकान के पास पहुंचा तो फांसी के फंदे पर अफसाना को देख सलमान के पैरों तले से जमीन खिसक गयी। देखते ही देखते घटना आग की तरह गांव में फैल गयी। घटना की जानकारी लड़की पक्ष को दी गयी।

सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे मृतका के पिता सलामुद्दीन ने थाने पर नामजद तहरीर देकर ससुराल पक्ष के लोगों पर हत्या करने का आरोप लगाया। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर मृतका की सास व पति को थाने में ले गयी। वहीं हत्या है या आत्महत्या, इस पहेली को सुलझाने में भी पुलिस जुट गयी है।

मृतका के पिता ने ससुराल वालों पर दहेज मांगने व हत्या करने का लगाया आरोप

अफसाना की मौत की खबर होते ही सिंहौली गांव निवासी सलामुद्दीन के परिवार में कोहराम मच गया। आनन–फानन में हीरापुर मचहटी गांव पहुंचे सलामुद्दीन ने ससुराल वालों पर दहेज को लेकर हत्या करने का आरोप लगाते हुये थाने में लिखित तहरीर दिया। साथ ही आरोप लगाया कि अफसाना की शादी विगत 7 वर्ष पूर्व सलमान पुत्र अजीम से हुई थी। शादी के समय से ही दहेज को लेकर विवाद चल रहा था। ससुराल वाले लगातार 4 पहिया वाहन एवं दो लाख रुपए नगद और एक सोने की चेन की मांग कर रहे थे। साथ ही फोन कर धमकी दे रहे थे कि यदि दहेज नहीं दिया तो तुम्हारी बेटी को जान से मार दिया जायेगा। आखिरकार आज उन्होंने हमारी बेटी को जान से मार ही दिया। उन्होंने सलमान, आजाद, अरमान, करिया पुत्रगण अजीम, अजीम पुत्र फेकू, तमन्ना पत्नी आजाद व अफसाना पत्नी अजीम को आरोपी बताकर पुलिस से कार्यवाही की मांग किया।

हीरापुर मचहटी गांव में विवाहिता के फांसी के फंदे पर लटकते शव की सूचना पर क्षेत्राधिकारी अजीत रजक व थानाध्यक्ष सत्य प्रकाश सिंह मय टीम के साथ घटनास्थल पहुंचकर शव को कब्जे लेकर घटना से जुड़े सभी पहलुओं की जांच शुरू कर दिये। इस बाबत सीओ अजीत कुमार ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।मृतका के पिता की तरफ से हत्या से संबंधित तहरीर प्राप्त हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार मां-बेटे की मौत, एक महिला गंभीर

मछलीशहर, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कोतवाली क्षेत्र के स्थानीय कस्बे के चौराहे पर ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार मां बेटे की मौत हो गई। इस दुर्घटना में मृतक की बड़ी मां की हालत नाजुक बनी हुई है। मीरगंज थाना क्षेत्र के घाटमपुर गांव निवासी अरविंद कुमार सरोज पुत्र रमाशंकर सरोज उम्र लगभग 25 वर्ष अपनी माता मंजू देवी उम्र लगभग 48 वर्ष और बड़ी मां फोटो देवी उम्र लगभग 55 वर्ष एक ही बाइक पर सवार होकर मंगलवार को बाजार आए हुए थे। बाजार से घर वापस जाते समय चुंगी चौराहे के पास से जैसे ही गुजर रहे थे कि विपरीत दिशा से आ रही ट्रक की चपेट में आने से मंजू देवी की मौके पर मौत हो गई। इस दुर्घटना में घायल फोटो देवी अरविंद कुमार सरोज को गंभीर रूप से घायल अवस्था में जिला अस्पताल लाया गया। जिला अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सक ने अरविंद को मृत्यु घोषित कर दिया और फोटो देवी की हालत गंभीर देखकर वाराणसी बीएचयू के लिए रेफर कर दिया गयाहै।

इस दुर्घटना की जानकारी मिलते ही पूरे परिवार में कोहराम मच गया है। मृतक अपनी माता-पिता की इकलौती संतान था। पिता की पहले ही मौत हो चुकी है और इसकी एक वर्ष की पुत्री है। एक तरह की यह मान लिया जाएं कि अब इसका पूरा परिवार उजड़ गया है। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पहुंची और मां बेटे की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

पुल बन जाने से यूनिवर्सिटी, मेडिकल कालेज, शहर में आने जाने वाले लोगों को मिलेगी बड़ी राहत: डीएम

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डा0 दिनेश चन्द्र के द्वारा गोमती नदी पर प्यारेपुर से अलीगंज बाजार के निकट कलीचाबाद मार्ग पर नवनिर्मित पुल का अवलोकन किया गया। यह पुल 211.88 मी0 लंबे (पहुंच मार्ग तथा अतिरिक्त पहुंच मार्ग सहित) तथा 2993.31 लाख की लागत का है।

इस दौरान जिलाधिकारी ने बताया कि इस पुल निर्माण का कार्य 2022 से कार्य प्रारम्भ था, मुख्यमंत्री के निर्देश के क्रम में निर्माण में आनी वाली कमियों को दूर कराते हुए विगत 01 साल में ही कार्य को पूर्ण कराया गया है जिसे गत दिसम्बर माह में लोगो के आवागमन के लिए खोल दिया गया है जिससे आम जनमानस को राहत मिल रही है। इस पुल के बन जाने से वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल यूनिवर्सिटी, मेडिकल कालेज, शहर में आने जाने वाले लोगो का राहत मिलेगी।

इस दौरान जिलाधिकारी ने आमजनमानस से वार्ता की ग्रामीणों ने बताया कि इस पुल के बन जाने से यातायात सुगम हो गया है जिससे समय की बचत हो रही है, जाम की समस्या से भी राहत मिल रही है। पुल के निर्माण हो जाने से अर्न्तजनपदीय कनेक्टविटी पहले से बेहतर हो गयी है। आमजन ने मुख्यमंत्री और जिला प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने गरीब और असहायों को कंबल भी वितरित किया। इस अवसर पर डिप्टी प्रोजेक्ट मैनेजर जे पी गुप्ता सहित अन्य उपस्थित रहे।

जौनपुर कोतवाली से मिला लावारिश शव हुआ दफन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिले में मिलने वाले मुस्लिम लावारिश शव को दफन करवाने वाली कमेटी लावारिस शव इंतजामियां कमेटी ने कोतवाली थाने से मिला हुआ। एक शव देर शाम हम्जा चिश्ती स्थित कब्रिस्तान पर दफन करवाया शव के बारे में पुलिस विभाग से आरक्षी अविनाश सिंह ने बताया कि यह शव लाइन बाजार से जिला अस्पताल में भर्ती व्यक्ति का है। उक्त व्यक्ति की मौत इलाज के दौरान जिला अस्पताल में हुई है। पोस्टमार्टम के बाद मुस्लिम समुदाय का होने पर कमेटी को सौंपा गया। हुलिया से अधेड़ प्रतीत हो रहा था जिसकी उम्र लगभग 45 साल होगी। कमेटी के द्वारा पूरे मुस्लिम रीति रिवाज से इसे हजरत हम्जा चिश्ती स्थित कब्रिस्तान पर दफन करवाया गया। कमेटी के संस्थापक रियाजुल हक ने बताया कि लॉकडाउन के बाद से मुस्लिम शव को दफन करने का सिलसिला लगातार जारी है इसी क्रम में यह 163 वा शव था। इस मौके पर कमेटी के अन्य सदस्य उपस्थित रहे, नमाज ए जनाजा हाफीज अजहर रशिदाबादी ने अदा कराई।वही कमेटी के अन्य सदस्यों का भी विशेष योगदान रहा।

मो.आजम खान की वालिदा के निधन पर अखिलेश यादव ने जताया शोक

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। समाजवादी पार्टी के मीडिया पैनलिस्ट/प्रवक्ता मोहम्मद आजम खान की वालिदा श्रीमती सलमा खान (75वर्ष) के निधन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं मुख्य प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी ने गहरा शोक जताया है। आपको बता दें कि श्री खान की वालिदा का इंतकाल लखनऊ में स्थित हॉस्पिटल में हुआ। उनके निधन की जानकारी होते ही उनके गृह जनपद जौनपुर में स्थित उनके गांव -गभिरन,पोस्ट-रानीपुर में शोक व्यक्त करने वालों का तांता लग गया। कुछ लोग लखनऊ पहुंचे तो कुछ लोगों ने फोन के माध्यम से शोक संवेदना प्रकट किया। इस दौरान उनकी मिट्टी में राजनीतिक दलों के लोग, पार्टी कार्यकर्ता, पदाधिकारी, शुभचिंतक, पत्रकार व कई अन्य साथी मौजूद रहे। पूर्व विधायक सदर मो.अरशद खान, अमीक जामेई, पूर्व जिलाध्यक्ष लाल बहादुर यादव, जफराबाद चेयरमैन प्रतिनिधि डॉ.सरफराज अहमद , सिराज अहमद प्रधान, साकिब प्रधान, असलम नेता, हुसामुद्दीन सिद्दीकी, गोरे यादव, मो.दानिश, अधिवक्ता सिविल मो.असलम खान,बाबर सिद्दीकी, मो. अकरम उर्फ मुन्ना, शादाब अहमद, सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शोक व्यक्त करते हुए आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की है।

जमीनी विवाद में पट्टीदारों ने सगे भाइयों को मारपीट कर किया घायल, पुलिस जांच पड़ताल में जुटी

विशाल सोनी

शाहगंज,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कई दिनों से चली आ रही जमीनी रंजिश में दो पक्ष आमने सामने हो गए और जमकर मारपीट की। जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के ताखा पूरब निवासी वर्षीय राजेश यादव एवं राकेश यादव पुत्रगण राजाराम को गुरुवार की सुबह जमीनी विवाद को लेकर पट्टीदारों ने उक्त दोनों भाइयों को बुरी तरह मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित ने मामले की सूचना कोतवाली पुलिस को दे दी है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है।

विकास खण्ड परिसर केराकत में रोजगार मेला का आयोजन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सेवायोजन उ0प्र0 के निर्देश के क्रम में जिला सेवायोजन कार्यालय जौनपुर के तत्वावधान में (मिशन रोजगार अभियान) विधानसभा केराकत के खण्ड विकास परिसर केराकत में 13 जनवरी 2026 को प्रातः 10:00 बजे रोजगार मेला का आयोजन किया जायेगा, जिसमें (05) कंपनियों के द्वारा शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल, इण्टर, आई0टी0आई0 एवं स्नातक उत्तीर्ण 200 बेरोजगार अभ्यर्थियों को निजी क्षेत्र की कंपनियों में सेवायोजित कराये जाने हेतु रोजगार मेले का कैम्पस के माध्यम से सेलेक्शन किया जायेगा। जिसमें अभ्यर्थी अपने योग्यता अनुसार प्रतिभाग करते हुए, विभिन्न पदों पर साक्षात्कार के माध्यम से रोजगार प्राप्त करें। जिला सेवायोजन अधिकारी जय प्रकाश पासवान ने बताया कि रोजगार मेला में सम्मिलित होने के लिए अभ्यर्थियों को अपने साथ समस्त शैक्षिक अभिलेखों की छायाप्रति, आई0डी0 प्रूफ, बायोडाटा सहित प्रतिभाग करें। सेवायोजन वेब पोर्टल www.rojgaarsangam.up.gov.in के माध्यम से भी अभ्यर्थियों को अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग करने की अपील की है।

कर्णघण्टा में हुई चोरी की घटना में शामिल 5 आरोपी, दो किलो से अधिक सोने का आभूषण बरामद

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद में गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में एसओजी प्रभारी गौरव सिंह, थाना प्रभारी चौक दिलीप कुमार मिश्र, उप निरीक्षक प्रकाश चौहान, उप निरीक्षक पुष्कर दुबे, उप निरीक्षक आलोक कुमार यादव, एस आई भरत पाण्डेय, हेड कांस्टेबल चंद्रभान यादव, पवन कुमार तिवारी, मयंक त्रिपाठी, दिनेश कुमार, मनीष बघेल, अंकित मिश्रा, आलोक वर्मा एसओजी टीम, हेड कांस्टेबल संतोष पासवान, कांस्टेबल अश्वनी कुमार सिंह सर्विलांस टीम में शामिल रहें। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम को पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल द्वारा 01 लाख रुपये नगद पुरस्कृत किया गया।

अब खेतों में सौर ऊर्जा से संचालित लाइट ट्रैप से हानिकारक कीटों को किया जाएगा नष्ट

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला कृषि रक्षा अधिकारी द्वारा जनपद के किसान भाईयों से अपील किया है कि वर्तमान समय में फसलों को कीटो से बचाने के लिए किसानों को कीटनाशक रसायनों का छिड़काव नही करना पडेगा। इसके लिए कृषि विभाग (कृषि रक्षा अनुभाग) द्वारा सोलर लाइट ट्रैप की व्यवस्था की है। जनपद में किसानों को खेतों में लगाने हेतु 2000 लाइटें मिली है और किसानों को 75 प्रतिशत अनुदान पर दी जायेगी। इसके लिए किसानों का पंजीकरण कराना होगा। फसल को कीटों से बचाने के लिए जिस रासायनिक दवा का छिड़काव किया जाता है वह फसलों के पोषक तत्वों को नष्ट कर देती है। अब खेतों में सौर ऊर्जा से संचालित लाइट ट्रैप से हानिकारक कीटों को नष्ट किया जायेगा। उन्होंने बताया कि जिलें में 2000 सोलर लाइटें आयी है यह पंजीकरण वाले किसानों को 75 प्रतिशत अनुदान पर दी जायेगी। खेतों के बीच में इस सोलर लाइट को लगाया जायेगा। रात में यह सोलर लाइट जलेंगी तो लाइट के पास कीट आयेंगें लाइट के नीचे की तरफ काफी बड़ा बाक्स की तरह एक ट्रैप लगा रहेगा इस ट्रैप में पानी भरने के बाद डीजल डालना होगा लाइट के पास आने-वाले कीट उस ट्रैप में गिरकर मर जायेंगे। जिले के प्रत्येक विकास खण्ड में कृषि रक्षा इकाई केन्द्रो पर सामयिक कृषि रसायन खरपतवारनाशक रसायन में 50 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड में 75 प्रतिशत तथा सोलर लाइट ट्रैप फेरोमेन ट्रैप आदि पर 75 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है।

पान मसाला के छोटे उद्योगों पर मंडराया बंदी का साया, एक फरवरी से बदल जाएंगे नियम

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। पान मसाला पर एक फरवरी से स्वास्थ्य और सुरक्षा उपकर लगाने से छोटी पान मसाला इकाइयों पर बंदी का साया मंडराने लगा है। अभी तक पान मसाला निर्माण पर कम्पनसेशन सेस लगाया जाता था। उद्यमियों को जो टैक्स अदा करना होता था ।वह टैक्स के साथ अगले माह की 20 तारीख तक जमा करना होता था। लेकिन अब इसे उत्पादन से पहले ही हर माह की सात तारीख तक जमा करना होगा इससे छोटे कारोबारियों की पूंजी फंस जाएगी और कुछ माह में ही फैक्ट्री चलाने में मुश्किलें पैदा हो सकती हैं। मर्चेंट्स चैंबर की जीएसटी कमेटी के सलाहकार सीए धर्मेन्द्र श्रीवास्तव के मुताबिक अभी तक जो कम्पनसेशन सेस लग रहा था। वह 31 जनवरी को खत्म हो रहा है। इसकी जगह अब नया उपकर लगाया जा रहा है इसमें हर इकाई को अपना पंजीयन तो कराना ही होगा। इसके साथ ही उसे हर माह सात तारीख से पहले इस उपकर को चुकाना होगा। यह सेस इतना ज्यादा होगा कि कारोबारियों की पूंजी फंसेगी कानपुर और आसपास की पान मसाला फैक्ट्रियों की बात की जाए तो यहां पनकी औद्योगिक क्षेत्र में एसएनके, गगन, फजलगंज औद्योगिक क्षेत्र में सर, रायल, ट्रांसपोर्ट नगर में मधु पान मसाला, मधु जर्दा, शिखर, केसर पान मसाला की फैक्ट्री हैं, वहीं गड़रियनपुरवा में सिग्नेचर, मंधना में शुद्ध प्लस, कानपुर देहात के रनिया में किसान पान मसाला की फैक्ट्री हैं, कानपुर में बनने वाले कई ब्रांड बड़े भी हैं और कुछ काफी छोटे इनमें से जिनके पास एक से ज्यादा फैक्ट्री हैं। उन्हें हर फैक्ट्री के लिए अलग पंजीयन कराना होगा उपकर के भुगतान की जिम्मेदारी एक फरवरी से शुरू हो जाएगी। महीने की सात तारीख से पहले उपकर जमा करना होगा। ऐसा न करने पर कम से कम 10 हजार रुपये का जुमार्ना लगेगा । इतना ही नहीं सभी फैक्ट्री संचालकों को पैकिंग मशीन पर कैमरे लगाने होंगे साथ ही इसकी रिकार्डिंग भी दो साल रखनी होगी। अधिकारी इसे कभी भी मांग सकेंगे और उन्हें यह रिकार्डिंग 48 घंटे में देनी होगी इससे भी फैक्ट्री संचालकों का खर्च बढ़ेगा उपकर का भुगतान मासिक आधार पर पैकिंग मशीनों की संख्या और उनकी अधिकतम पैकिंग स्पीड के आधार पर किया जाएगा। एक फरवरी से पान मसाला, सिगरेट, तंबाकू और ऐसे उत्पादों पर 40 प्रतिशत जीएसटी लागू होगा। इसके अलावा उपकर होगा अभी पान मसाला पर 28 प्रतिशत जीएसटी के अलावा उपकर लगाया जाता है। सीए धर्मेन्द्र श्रीवास्तव के मुताबिक वर्ष भर में यह उपकर कई करोड़ होगा। छोटे फैक्ट्री संचालकों के पास इतना धन ही एक नंबर में नहीं होता इतना उपकर जमा करने पर उनके पास पूंजी ही खत्म हो जाएगी और उनकी फैक्ट्रियों पर बंदी का खतरा मंडराने लगेगा वहीं बड़े ब्रांड के पास इतनी पूंजी है कि वह वर्ष भर भी घाटे पर काम कर सकते हैं। लेकिन इसके बाद उनके लिए लाभ का सौदा यह होगा कि छोटे फैक्ट्री संचालकों के मैदान से बाहर होने के बाद उनका बाजार भी उन्हें मिल जाएगा। इसके साथ बाजार में दो तरह के विकल्प हैं। इसमें एक विकल्प पाउच में पान मसाला कम करने का है और दूसरा कीमत बढ़ाने का है इन दोनों तरह से उपकर के भार को बैलेंस करने का प्रयास हो सकता है।

माता की चौकी में शामिल होकर भाजपा प्रत्याशियों ने लिया आशीर्वाद

भायंदर। श्री शनि धाम पंचदेव इच्छापूर्ति मंदिर, मीरा रोड पूर्व द्वारा 8 दिसंबर की शाम को बालाजी लॉन में माता की चौकी का भव्य आयोजन किया गया। सुप्रसिद्ध गायक मनोज छापरवाल द्वारा गाए देवी गीतों ने उपस्थित लोगों को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम के दौरान प्रभाग क्रमांक 18 के सभी चारों भाजपा प्रत्याशियों ने आकर मंच पर स्थापित दुर्गा माता का आशीर्वाद लिया। इस वार्ड के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली पूर्व नगरसेविका तथा वर्तमान बीजेपी प्रत्याशी नीला सोंस का जन्मदिन भी धूमधाम से मनाया गया। उनके साथ उपस्थित भाजपा प्रत्याशी पूर्व महापौर निर्मला सावले, एडवोकेट मयूरी म्हात्रे तथा भाजपा के युवा चेहरा के रूप में चुनाव लड़ रहे विवेक उपाध्याय का भी आयोजन समिति की तरफ से सम्मान किया गया। मंदिर के महंत शास्त्री सुरेश गुरु ओझा ने धार्मिक अंग वस्त्र तथा पुष्पगुच्छ देकर सबका सम्मान किया तथा समस्त लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। नीला सोंस ने उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि सभी लोग उनके परिवार की तरह हैं। वार्ड को और सुविधाजनक बनाने की दिशा में वे सदैव प्रयत्नशील रहेंगी। उन्होंने कहा कि इस वार्ड का पैनल सक्षम, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ लोगों का पैनल है। आप सभी के आशीर्वाद से यह पैनल रिकॉर्ड मतों से विजय प्राप्त करेगा। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में राज रीयल्टी के डायरेक्टर राजेश सिंह, भवन निमार्ता सुरेंद्र उपाध्याय, समाजसेवी ओम प्रकाश मिश्रा, भाजपा नेता तथा प्रभाग 18 के प्रभारी सुरेश सिंह, महामंत्री कमलेश दुबे, संजय विरादर, पराग चित्तौड़कर, वरिष्ठ समाजसेवी रत्नाकर मिश्रा, ओम प्रकाश मिश्रा, पुलिस उप निरीक्षक जितेंद्र कुमार, रविकांत दुबे, समाजसेवी गौरी शंकर पांडे, राज मिश्रा, समाजसेवी जीतू गुप्ता, महेंद्र पांडे, रघुवंश पांडे, मुकेश तिवारी, रवींद्र तिवारी, समाजसेवी अंजू तनेजा, सुजाता अधिकारी, शीला शर्मा, भूमि दुबे, प्रियंका दुबे, ज्योति ठक्कर, दीपिका ओझा, मंजू दुबे समेत सैकड़ों लोग उपस्थित रहे। अंत में महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मुंबई महानगरपालिका चुनावः कांग्रेस उम्मीदवारों ने विभिन्न ब्लॉकों से ठोकी ताल

मुंबई। मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) में होने वाले आगामी चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। देश की प्रमुख राजनीतिक पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी इस चुनावी मुकाबले में पूरी ताकत झोंक दी है। पार्टी ने मुंबई के विभिन्न ब्लॉकों से अपने उम्मीदवार उतारकर मतदाताओं के बीच पहुंच बनानी शुरू कर दी है।

कांग्रेस पार्टी की ओर से जिन प्रमुख उम्मीदवारों ने चुनावी मैदान में कदम रखा है, उनमें ब्लॉक 90 से श्रीमती ट्यूलिप मिरांडा, ब्लॉक 71 से अधिवक्ता श्रद्धा घौडगे, ब्लॉक 94 से श्रीमती सुप्रिया पाठक, ब्लॉक 89 से कमलेश चौरसिया, ब्लॉक 85 से अय्यनार यादव और ब्लॉक 70 से भूपेन्द्र शिंगारे शामिल हैं। ये सभी उम्मीदवार अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं और स्थानीय मुद्दों को लेकर जनता से संवाद कर रहे हैं।

कांग्रेस उम्मीदवारों का कहना है कि वे मुंबई के नागरिकों को बेहतर बुनियादी सुविधाएं, पारदर्शी प्रशासन, स्वच्छता, जलापूर्ति, सड़क और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देंगे। कई उम्मीदवारों ने यह भी बताया कि महानगरपालिका में जनहित से जुड़े कार्यों को मजबूती से उठाना उनका मुख्य उद्देश्य है।

ब्लॉक 71 से उम्मीदवार अधिवक्ता श्रद्धा घौडगे ने कहा कि वे महिलाओं और युवाओं से जुड़े मुद्दों को विशेष रूप से आगे बढ़ाएंगी, वहीं ब्लॉक 90 से ट्यूलिप मिरांडा ने स्थानीय नागरिक समस्याओं के त्वरित समाधान का भरोसा दिलाया। अन्य उम्मीदवार भी अपने क्षेत्रों में जनसभाओं, घर-घर संपर्क और बैठकों के माध्यम से मतदाताओं का समर्थन जुटाने में लगे हुए हैं।

कुल मिलाकर, मुंबई महानगरपालिका चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने विविध पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को मैदान में उतारकर मुकाबले को रोचक बना दिया है। आने वाले दिनों में चुनावी प्रचार और तेज होने की संभावना है, जिससे मुंबई की राजनीति में हलचल और बढ़ गई है।

अनु सैनी ने जीते दो स्वर्ण पदक

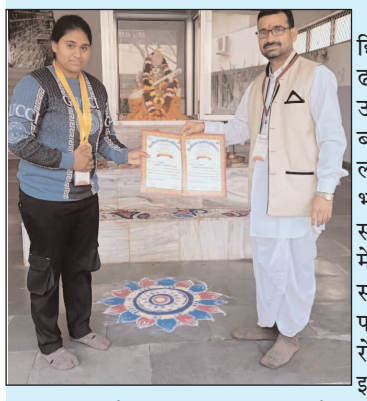

चिराना। निकटवर्ती टोंक छिलरी ग्राम के मालियों की ढाणी में स्थित राजकीय उपाध्याय संस्कृत विद्यालय की बालिका अनु सैनी पुत्री शंकर लाल सैनी ने शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अधीन केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर में आयोजित हुई राजस्थान राज्य संस्कृत शास्त्र स्पर्धा में दो स्वर्ण पदक प्राप्त कर गांव का नाम रोशन किया है ।आपको बता दे इस जीत के बाद आगामी फरवरी माह में कांचीपुरम तमिलनाडु में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत शास्त्र प्रतियोगिता में भी अनु सैनी राजस्थान राज्य का प्रतिनिधित्व करेगी। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर में 6 से 7 जनवरी तक आयोजित हुई इस प्रथम प्रतियोगिता में काव्यकंठ पाठ में महाकवि भारवी लिखित किरात अर्जुनियम महाकाव्य की 1030 श्लोकों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा इसी क्रम में द्वितीय प्रतियोगिता अक्षर श्लोकी में संस्कृत काव्य शास्त्रीय 27 ग्रंथों एवं 14037 श्लोकों पर आधारित प्रतियोगिता में दूसरा स्वर्ण पदक हासिल किया है। विजेता छात्रा ने इसका श्रेय अपने गुरु व्याख्याता व्याकरण शास्त्र के रविकांत शर्मा को दिया और बताया कि यह उपलब्धि उनके मार्गदर्शन में ही मुझे मिली है ।छात्रा अन्नू जब विजेता होकर अपने गांव कस्बे में पहुंची तो प्रधानाचार्य डॉक्टर भागीरथ सिंह ने अनु की प्रशंसा करते हुए कहा कि अन्य विद्यार्थियों को भी इससे प्रेरणा लेकर इस प्रकार की प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए। प्रतिभा प्रोत्साहन समारोह में इस दौरान अमीलाल ढाका, सुरेश कुमार भास्कर, सुरेंद्र कुमार मोतीलाल सैनी, श्रवण कुमार सैनी, सतीश सुईवाल सहित विद्यालय के कई छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

प्रभाग 15 क में पूर्व नगर सेवक द्वारा विकास कार्यों की गयी अनदेखी से योगेश सिंह की जीत पक्की

-लाल शेखर सिंह

वसई (उत्तर शक्ति)। वसई विरार महानगर पालिका चुनाव में इस बार प्रभाग 15 क से भारतीय जनता पार्टी ने योगेश सुरेश प्रसाद सिंह को अपना प्रत्याशी बनाया है।योगेश सुरेश प्रसाद की समाज की सेवा और जिम्मेदारी एवं पार्टी निष्ठा के परिणाम स्वरूप भारतीय जनता पार्टी ने इन्हें अपना प्रत्याशी बनाया है। योगेश सुरेश प्रसाद एक प्रतिष्ठित परिवार से आते हैं। क्षेत्र की जनता के बीच इनकी बड़ी लोकप्रियता है। योगेश सिंह को प्रचार के दौरान जनता का भारी प्रतिसाद मिलने से उनकी जीत सुनिश्चित है।

जनसमर्थन की इस आंधी को देखते हुए लगता है कि वार्ड 15- क में मतदाताओं ने पूरी तरह से योगेश सिंह को विजय दिलाने का मूड बना चुकी है। वैसे तो सूत्रों से पता चला है कि प्रभाग 15 कि भाजपा सीट बिल्कुल पक्की मानी जा रही है। योगेश सिंह जनता को सदैव से जनार्दन ही समझते है। कोई भी रात दिन चाहे जब भी याद किया है तो तुरन्त हर प्रकार से हर संभव मदद करते है। भाजपा के पुराने कार्यकताओं में इनका नाम अग्रिम पंक्तियों में आता है, भाजपा के नेताओं में शुमार योगेश सिंह सरल सहज मृदुभाषी स्वभाव के कारण सभी समाज सभी वर्गों में लोकप्रिय है। लोग इन्हें दिलो जान से चाहते है। सूत्रों से पता चला है कि इस बार मनपा में महापौर भाजपा का ही बैठने वाला है। यदि ऐसा हुआ तो योगेश सिंह को जरूर कोई बड़ी जबाव दारी का पद मिलेगा इस तरह का कयास वार्ड क्रमांक 15 की जनता लगा रही हैं। सूत्रों की माने तो पूर्व में विकास कार्यों के प्रति की गयी अनदेखी के कारण पूर्व नगर सेवक के प्रति क्षेत्र की जनता में भारी असंतोष दिखाई दे रहा है। प्रभाग 15 की जनता परिवर्तन के पक्ष में खड़ी दिखाई दे रही है। वसई के सेंट्रल पार्क में मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस की हुई सभा के कारण भाजपा के प्रति जनता का रूझान साफ दिखाई दे रहा है इसका भी लाभ प्रभाग क्रमांक 15 में योगेश सिंह को मिलने की पूरी संभावना है जो उनकी जीत को सुनिश्चित कर सकती है।

मोहम्मद आजम खान की मां के निधन पर अखिलेश यादव ने जताया शोक

जौनपुर। समाजवादी पार्टी के मीडिया पैनलिस्ट और प्रवक्ता मोहम्मद आजम खान की मां श्रीमती सलमा खान (75वर्ष) के निधन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं मुख्य प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी ने गहरा शोक जताया है। आपको बता दें कि श्री खान की वालिदा का इंतकाल लखनऊ में स्थित हॉस्पिटल में हुआ। उनके निधन की जानकारी होते ही उनके गृह जनपद जौनपुर में स्थित उनके गांव -गभिरन,पोस्ट-रानीपुर में शोक व्यक्त करने वालों का तांता लग गया। कुछ लोग लखनऊ पहुंचे तो कुछ लोगों ने फोन के माध्यम से शोक संवेदना प्रकट किया। इस दौरान उनकी मिट्टी में राजनीतिक दलों के लोग, पार्टी कार्यकर्ता, पदाधिकारी, शुभचिंतक, पत्रकार व कई अन्य साथी मौजूद रहे। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शोक व्यक्त करते हुए आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की है।

दुनिया भर में धूमधाम से मनाया गया प्रवासी भारतीय दिवस

नई दिल्ली। प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) 9 जनवरी को देशभर के साथ-साथ विदेशों में भी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विदेशों में रहने वाले भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। पीएम मोदी ने कहा कि विदेशों में रह रहे भारतीय, भारत और दुनिया के बीच एक मजबूत सेतु का काम कर रहे हैं। इस मौके पर विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए।

जिनेवा स्थित संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने शुक्रवार की शाम एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग शामिल हुए। वहीं शंघाई स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने इस दिन को इंडियन एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देने के तौर पर मनाया। यहां तैनात भारत के महावाणिज्य राजदूत प्रतीक माथुर ने हांग्जो के रिजनल टूरिज्म और उभरते एआई हब का दौरा किया। इस दौरान कॉन्सुल जनरल ने भारतीय कम्युनिटी के सदस्यों और एआई-टेक-नेक्स्ट जेनरेशन स्टार्टअप्स के लिए काम करने वाले भारतीय प्रवासी युवा थॉट लीडर्स से भी बातचीत की। उन्होंने अलग-अलग सेक्टर्स में बदलाव लाने और 'मेड इन इंडिया, मेड फॉर द वर्ल्ड' एआई सॉल्यूशंस में योगदान देने के लिए उनके इनोवेटिव काम की प्रशंसा की।

भूटान स्थित भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, ह्वाइप्रवासी भारतीय दिवस पुराने रिश्तों को मजबूत करने, दोस्ती बढ़ाने और देश के विकास में भारतीय डायस्पोरा के योगदान का सम्मान करने का एक लंबे समय से चला आ रहा अवसर है।

प्रेम केवल समर्पण चाहता हैः पूज्य राजन महाराज

-दिनेश सिंह

मुम्बई(उत्तरशक्ति)। गोरेगाँव पश्चिम स्थित बांगुर नगर के लक्ष्मी सरस्वती ग्राउंड पर चंद्रकांत गुप्ता एवं चमेली देवी गुप्ता के पावन संकल्प से प्रेममूर्ति पूज्यश्री प्रेमभूषण महाराज के कृपापात्र पूज्य राजन महाराज के व्यासत्व में रामकथा सेवा समिति मुम्बई द्वारा आयोजित नौ दिवसीय रामकथा महोत्सव में पूज्य राजन महाराज ने मिथिला के मंगल विवाह प्रसंग का गान करते हुए कहा कि हम इस भ्रम में ना रहे कि,देवता आकाश में ही रहते हैं इस धरती पर भी देवता रहते हैं और सफेद कुर्ते में भी राक्षस रहते हैं। भगवान शिव के अनुसार जो व्यक्ति मातापिता गुरू और भगवान को नही मानता और साधुसंतों से सेवा करवाता है वह राक्षस है, और यदि हम किसी के उत्कर्ष को देखकर प्रसन्न होते हैं तो यही देवत्व भाव है। ऐसे लोग इस धरती के देवता हैं। पूज्य राजन महाराज ने बताया कि,मानस में भगवान केवल दो स्थान पर बिहसे हैं एक श्रृंगवेरपुर में गंगा तट पर केवट जी के समक्ष और मिथिला में सीताजी के समक्ष क्योंकि दोनों का ही प्रेम अलौकिक था। अलौकिक प्रेम में चाहत नही, केवल समर्पण होता है।प्रेम में चाहत और नियम होने से प्रेम समाप्त हो जाता है। पूज्य राजन महाराज ने कहा कि भगवान की पूजा लोग समय देखकर करते हैं किंतु प्रेम में समय बाधक नहीं होता। प्रेम कभी भी किया जा सकता है। भगवान आरती करने से नही प्रेम करने से प्रसन्न होते हैं। पूज्य राजन महाराज की कथा में धनुष भंग की जानकारी होते ही आवेश में परशुरामजी का जनकजी के दरबार में आगमन होता है। परशुराम लक्ष्मण संवाद के मध्य भगवान ने कहा कि ब्राह्मणों के प्रति निष्ठा रखने वाला सर्वकाल निर्भय होकर जीता है इतना सुनते ही परशुराम जी का क्रोध शांत हो जाता है। राम को भगवान जानकर परशुराम जी तपस्या हेतु चले जाते हैं। पूज्य राजन महाराज ने कहा कि किसी दूसरे के घर जाकर कुल परंपरा के विषय में राय नही देनी चाहिए।

कुल परंपरा के अनुसार विवाह हेतु मिथिला के दूत अयोध्या दशरथ जी के यहाँ जाते हैं अयोध्या से बारात लेकर चक्रवर्ती महाराज जनकपुर आते हैं। मिथिला में चक्रवर्ती जी के चारों पुत्रों का विवाह सनातन कुल परंपरा के अनुसार सम्पन्न होता है। पूज्य राजन महाराज ने मिथिला के विवाह मंगल प्रसंग पर चुमावत हो ललना धीरे धीरे आज मिथिला नगरिया निहाल सखियाऱ्ऱछैलवा को देइहौ चुनि चुनि गारीऱआदि पारंपरिक मंगल गीतों को सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। रामकथा महोत्सव में उमड़े अपार जन सैलाब के बीच पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी, लोकप्रिय गायक मोहन जी,सुप्रसिध्द समाजसेवी सद्गुरु फाउंडेशन के चेयरमैन गणेश अग्रवाल, रमेश चौबे,एडव्होकेट प्रीति पांडे,अशोका तिवारी, सरिता चौबे, समाज सेविका सुधा दूबे, रेखा गुप्ता, रामजानकी ट्रस्ट के प्रमुख दिनेश तिवारी आदि जनों ने भी रामकथा का श्रवण लाभ प्राप्त किया।

युवाओं का साथ और नारी शक्ति के भरपूर समर्थन से कॉंग्रेस प्रत्याशी डॉ. नरेंद्र कुमार मजबूत

दहिसर। बुजुर्ग मतदाताओं का आशीर्वाद , युवाओं का साथ और नारी शक्ति का भरपूर समर्थन दहिसर वार्ड क्रमांक-5 के कांग्रेस और सहयोगी दलों के दमदार उम्मीदवार डॉ. नरेंद्र कुमार को और अधिक ताकत से चुनाव लड़ने की प्रेरणा दे रहा है। दिनोंदिन उनका चुनाव प्रचार न सिर्फ गति पकड़ता जा रहा है बल्कि मतदाताओं में उनकी पकड़ भी मजबूत करता जा रहा है। उनके चुनाव प्रचार में बढ़ती कार्यकताओं और स्थानीय नागरिकों की भीड़ डॉ. नरेंद्र कुमार का हौंसला बुलंद किये हुए है। उनकी लोकप्रियता, सफलता के बढ़ते कदम को और मजबूत कर दे रही है। शुक्रवार को डॉ. नरेंद्र कुमार का चुनाव प्रचार अभियान हनुमान मंदिर, एसएन दुबे रोड, मिनी नगर, गोपीकृष्ण नगर, सिद्धिविनायक चाल, महावीर नगर, शिवाजी चौक, प्रभात एसआरए, अम्बर एवं शिवांगण सोसायटी तक चला। वहीं दोपहर बाद उनकी प्रचार-यात्रा चिंतामण नगर से शुरू होकर शंखेश्वर नगर, सरिता ग्राम, सिद्धिविनायक गार्डन परिसर व पनोरमा पार्क तक सम्पन्न हुई और फिर संभाजी नगर में चौक सभा का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में नागरिक और सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वरदानः अब जौनपुर में भी सड़क हादसों में घायलों का होगा मुफ़्त इलाज

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। पूर्वांचल का मेदांता है,जौनपुर का साल्वेशन हॉस्पिटल,अब यहां रिटायर्ड फौजियों को कार्ड पर इलाज की हर सुविधा, केंद्र सरकार ने इस अस्पताल को दी मान्यता। वाराणसी- लखनऊ हाईवे पर जौनपुर शहर के बाहर दक्षिणी छोर पर कन्धरपुर गांव में कोरोना के बाद खुले साल्वेशनअस्पताल' में जनहित की सुविधा उपलब्ध है। अब इस अस्पताल में सड़क हादसे में घायलों को मुफ़्त इलाज की सुविधा मिलेगी। केन्द्रीय मन्त्री नितिन गडकरी ने पिछले दिनों हाईवे पर बढ़ते हादसों को लेकर चिन्ता जाहिर करते हुए कहा था कि सरकार अब सड़क हादसों में घायलों को मुफ़्त त्वरित इलाज की व्यवस्था में लगी है। इसी के मद्देनजर देश के सभी राज्यों में यह सुविधा दी जाने लगी है, उसी के तहत अन्य जिलों की तरह यह सुविधा जौनपुर में भी हो गई है। उपचार में होने वाले खर्च की भारपाई सरकार करेगी यानी इलाज करने वाले निजी अस्पताल को भुगतान घायल के परिजन को नहीं करना पड़ेगा, उन्हें बस हादसे की एफआईआर सम्बन्धित इलाके के थाने में करनी होगी। यह जानकारी सुविधा मुहैया कराने वाले 'साल्वेशन अस्पताल' के संचालक चिकित्सक डॉ. विवेक श्रीवास्तव ने बातचीत में दी। इस अस्पताल में रिटायर्ड फौजियों के इलाज की सुविधा भी केन्द्र सरकार की अनुमति से मिल गई है। अब रिटायर्ड फौजियों को खुद रेफर कराकर वाराणसी या लखनऊ, दिल्ली आदि नहीं जाना पड़ेगा, उन्हें अब हर बीमारी का उपचार यहीं मिलेगा, दो एकड़ से अधिक क्षेत्रफल में फैले इस अस्पताल परिसर में बेहतरीन कैंटीन है, यहां से आयुष्मान कार्डधारकों को मुफ़्त भोजन भी दिया जाता है।

लायंस क्लब शाहगंज स्टार द्वारा नि :शुल्क कंबल वितरण

-चंदन जायसवाल

शाहगंज, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। लायंस क्लब शाहगंज स्टार के तत्वावधान में दिनांक 8 जनवरी 2026 को लक्ष्मी नारायण वाटिका में क्लब अध्यक्ष लायन अरुण पांडे के नेतृत्व में निःशुल्क कंबल वितरण एवं नेकी की दीवार कार्यक्रम का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्लब का चार्टर डे भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कड़ाके की ठंड को ध्यान में रखते हुए सैकड़ों जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए। साथ ही नेकी की दीवार के माध्यम से एकत्र किए गए वस्त्रों का वितरण कर सेवा, सहयोग और मानवता का सशक्त संदेश समाज को दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उप जिलाधिकारी क्रुणाल गौरव एवं विशिष्ट अतिथि क्रमशः प्रभारी निरीक्षक के के सिंह, सर्वोदय इंटर कालेज खुदौली के प्रबंधक अनिल उपाध्याय एवं डॉ राजकुमार मिश्र रहे। कार्यक्रम के दौरान लायंस क्लब शाहगंज स्टार के पूर्व अध्यक्षगण— लायन रूपेश जायसवाल, लायन प्रदीप जायसवाल, लायन डॉ. एस. एल. गुप्ता, लायन डॉ. ज्ञानचंद चित्रवंशी, लायन प्रवीण श्रीवास्तव, जोन चेयरपर्सन लायन मनीष अग्रहरि, तथा चार्टर मेंबर लायन महेंद्र जायसवाल, लायन मनोज पांडेय एवं लायन सतीश चंद गुप्ता को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने क्लब द्वारा किए जा रहे सामाजिक सेवा कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए इन्हें समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बताया। कार्यक्रम का संचालन रविकांत जायसवाल ने किया। कार्यक्रम संयोजक लायन मनोज पांडेय एवं लायन रोमिल अग्रहरि ने सहयोग करने वाले सभी दानदाताओं, लायन सदस्यों एवं उपस्थित नागरिकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लायंस क्लब शाहगंज स्टार भविष्य में भी इसी प्रकार सेवा कार्यों के माध्यम से समाज के जरूरतमंद वर्ग की सहायता करता रहेगा। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष लायन अनिमेष अग्रहरि, लायन डॉ.आर. के. वर्मा, लायन मनीष श्रीवास्तव, लायन पवन साहू, लायन डॉ.आलोक पालीवाल, लायन राजेश चौबे, लायन राहुल राज मिश्रा, लायन पंकज सिंह, लियो क्लब अध्यक्ष लियो शुभम गुप्ता, कोषाध्यक्ष लियो दीपक अग्रहरि, लियो पवन अग्रहरि, लियो निलय अग्रहरि, लियो अमित सेठ, लियो वासु अग्रहरि, लियो शुभम पांडेय, लियो चंदन अग्रहरि सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

मछली विक्रेता की सड़क हादसे में मौत, आरोपी बाइक सवार फरार

खेतासराय, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। गुरुवार की रात्रि करीब 8 बजे मछली बेचकर बाइक से लौट रहा एक मछली विक्रेता युवक की सड़क हादसे में गम्भीर रूप से घायल हो गया। घायलावस्था में उसे एक निजी अस्पताल ले भेजवाया गया। जहाँ इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। जिससे परिजनों में कोहराम मच गया। जानकारी के अनुसार तारगहना गाँव निवासी कामता सोनकर (60 वर्ष) पुत्र भुल्लर सोनकर रोज की तरह लेदरही में मछली बेचने के बाद अपने घर तारगहना लौट रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार बुलेट मोटरसाइकिल ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कामता सोनकर सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए।

हादसे के बाद स्थानीय लोगों की मदद से घायल को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन दुर्घटना के बाद बुलेट मोटरसाइकिल चालक मौके से फरार हो गया। अस्पताल में इलाज के दौरान कामता सोनकर ने दम तोड़ दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है और फरार आरोपी की तलाश में जुट गई है। वही घटना से मृतक के परिवार में कोहराम मच गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

जौनपुर की सड़कों पर कब्जे का कारोबार, जाम में फँसता शहर

-इम्तियाज अहमद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जनपद के लगभग सभी प्रमुख शहरी बाजारों में पार्किंग और अतिक्रमण की समस्या अब आम जनजीवन पर भारी पड़ने लगी है। जेसीज चौराहा से ओलंदगंज तक, कसेरी बाजार से कोतवाली होते हुए सब्जी मंडी तक, सद्भावना पुल, चहारसू चौराहा या बदलापुर पड़ाव हर जगह हालात एक जैसे हैं। सड़कें अब आवागमन के लिए नहीं, बल्कि अव्यवस्थित व्यापार और बेतरतीब पार्किंग के लिए इस्तेमाल हो रही हैं।

छोटे व्यापारी मजबूरी में सड़क किनारे ठेले और स्टॉल लगाकर रोजी-रोटी चला रहे हैं, लेकिन बड़े व्यापारी भी इस अराजकता में पीछे नहीं हैं। हर दुकान के बाहर लगे बड़े-बड़े विज्ञापन बोर्ड सड़क का हिस्सा घेर लेते हैं। ऊपर से ग्राहक अपनी गाड़ियाँ ठीक दुकानों के सामने खड़ी कर देते हैं। नतीजा सड़क का अधिकांश हिस्सा व्यापारियों के कब्जे में चला जाता है। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि एम्बुलेंस,फायर ब्रिगेड या आम राहगीरों के लिए रास्ता निकालना मुश्किल हो जाता है।ऐसा लगता है मानो सरकारी सड़कों की रजिस्ट्री ही निजी हाथों में चली गई हो। सर्दियों में यह जाम किसी तरह झेल लिया जाता है, लेकिन गर्मियों में यही जाम लोगों के लिए आफत बन जाता है। इस अव्यवस्था के बीच आए दिन घटनाएँ सामने आती हैं कभी किसी दुकानदार की दुकान पर वाहन चढ़ जाता है, तो कभी आते-जाते आम लोगों को नुकसान उठाना पड़ता है। सवाल यह है कि इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? नगर पालिका परिषद, ज़िला प्रशासन, संबंधित विभाग और यातायात पुलिस सभी कहीं न कहीं अपनी जिम्मेदारी से बचते नजर आते हैं। सबसे ज्यादा पिसता है आम ट्रैफिक और उसे संभालने वाली ट्रैफिक पुलिस, जो सीमित संसाधनों में हालात काबू में रखने की कोशिश करती रहती है।

समाधान की जरूरत, सिर्फ कार्रवाई नहींः अब जरूरत है ठोस और व्यावहारिक योजना की। वेंडिंग जोन और नो-वेंडिंग जोन का स्पष्ट निर्धारण किया जाए, ताकि छोटे व्यापारी भी सम्मानपूर्वक व्यापार कर सकें और सड़कों पर चलने वालों को परेशानी न हो। पार्किंग के लिए चिन्हित स्थान हों और सड़क पर अतिक्रमण के खिलाफ बिना भेदभाव के कार्रवाई हो।

निष्कर्षः शहर का व्यापार और शहर की व्यवस्था—दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। अगर संतुलन नहीं बनाया गया तो नुकसान सबका होगा। जनहित में जिलाधिकारी डॉ०दिनेश चंद्र सिंह से अपेक्षा है कि वे इस गंभीर सामाजिक समस्या पर एक बेहतर, स्थायी और प्रभावी कार्ययोजना बनाकर अमल में लाएँ, ताकि जौनपुर का व्यापार भी चले और शहर भी सुचारु रूप से आगे बढ़े।

प्रधान ने कथित पत्रकार पर लगाया उत्पीड़न का आरोप

खुटहन, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। लोनियापट्टी गांव के प्रधान ने थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि एक कथित इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के यूट्यूबर पत्रकार गांव के विकास कार्यों को लेकर गलत खबर प्रसारित कर विकास कार्यों को कराने में बांधा उत्पन्न कर रहे हैं। यह भी आरोप लगाया कि उन्हे धमकी देकर अवैध धन की उगाही की मांग कर रहा है। थानाध्यक्ष रामाश्रय राय ने बताया कि तहरीर मिली है, आरोप की जांच की जा रही है। ग्राम प्रधान जयसिंह चौहान का आरोप है कि वह गांव के विकास का कार्य पूरी पारदर्शिता के साथ करा रहा है। समय समय पर उच्चाधिकारियों के द्वारा काम का स्थलीय निरीक्षण भी किया जाता है। बावजूद इसके एक कथित पत्रकार के द्वारा उसे कामों की जांच कराने की धमकी देकर बीस हजार रुपए मांगे जा रहे हैं। यह भी आरोप है कि पैसा न देने पर फर्जी वीडियो बना कर प्रसारित कर रहा है।

बिट्टू किन्नर ने जन्म दिन दिव्यांग बच्चों के संग मनाया

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जनपद की चर्चित किन्नर बिट्टू ने अपना जन्मदिन रूहट्टा स्थित राजेश स्नेह ट्रस्ट आफ एजुकेशन दिव्यांग बच्चों का स्कूल एवं पुनर्वास केंद्र के दिव्यांग बच्चों संग बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया,उन्होंने दिव्यांग जनों के बीच केक काटा ,फिर उन्होंने केक काटकर तुरंत एक सामने बैठी एक दिव्यांग बच्ची को खिलाया, तत्पश्चात आसपास खड़े लोगों को खिलाया, फिर सभी दिव्यांग बच्चों को बारी बारी से केक खिलाया , उसके बाद सभी आगंतुकों को केक खिलाया गया बिट्टू ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि प्रति वर्ष मै जन सामान्य के साथ जन्म का उत्सव मनाती थी इस बार दिव्यांग बच्चों के साथ अपना जन्म दिन मना कर बहुत अच्छा लगा रह , और दिव्यांग बच्चों को भी खुशी जन्म दिन के माध्यम से दे पा रही हूं और आगंतुकों ने बिट्टू को ढेर सारा उपहार दिया ।तपश्चात दिव्यांग बच्चों के साथ सभी ने भोजन ग्रहण किया, गृहस्वामी व संस्था के उपाध्यक्ष डॉ राजेश कुमार गुप्ता ने बिट्टू किन्नर का दिव्यांग बच्चों के संग अपना जन्म दिन मनाने पर बधाई दिया व आभार प्रकट किया फिर संस्था की सचिव किरन ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार किया , स्कूल की विशेष शिक्षिका हेमू वर्मा का प्रवेश गुप्ता समेत सभी लोगों का कार्यक्रम में बहुत सहयोग मिला । इस शुभ अवसर पर बिट्टू किन्नर की पूर्वांचल महोत्सव की टोली , अमित निगम दीपक श्रीवास्तव, रियाजुलहक खान दीपक सिंह, अपूर्व सिंह, शशांक, ऋषभ गुप्ता, प्रवेश गुप्ता, रोहित गुप्ता, नैंसी पटेल, प्रियांशी पटेल, शरद साहू, सलमान शेख,आराधना, सोनम झा, ऋचा सिंह,प्रियंका जायसवाल, राखी सिंह, यूट्यूबर लंगडी बुआ के नाम से प्रसिद्ध रिंकू विश्वकर्मा ,डॉ. विकाश सिंह, अंकिता मिश्रा, अमित, अरविंद सिंह, अंजना सिंह ,बन्देश सिंह, दिनेश तिवारी, उपेंद्र मिश्रा, शिवा सिंह, अंजू सिंह, किरन सिंह, प्रीति अग्रहरि, सुनीता अग्रहरि, मनीष गुप्ता, ईशान जायसवाल, शिवम जायसवाल, धीरज पाटिल, प्रिंस गौतम,अनुराग अग्रहरी, मनीष गुप्ता,आनंद सिंह चौहान, अंकित गिरी, नूपुर अग्रहरि, अरुण सिंह इत्यादि लोग उपस्थित रहें।